

घंटा...

विचित्र !

उपन्यास-लेखक
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

प्रकाशक
हिन्दी पुस्तक एजेंसी
ज्ञानवापी, बनारस

[तृतीय संस्करण]

प्रकाशक—
श्री बैजनाथ केडिया
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
ज्ञानवापी, बनारस



२०३ हरिसन रोड, कलकत्ता
दरीबा कलां, दिल्ली
बाँकीपुर, पटना



मुद्रक—
शं क र प्र सा द,
खगेश प्रेस, ढुंढिराज, बनारस

भूमिका

जुल्म है, गर न दो सुखनकी दाद !

—गालिब ।

"एक बार खरगोश और कछुएमें 'रेस' हुई ।"

और इसी पुरानी कहानीसे मैं घंटा की भूमिका शुरू करना चाहता हूँ । कोई सात-आठ बरस बाद अपने प्रेमी और उत्सुक पाठकोंसे बोलनेका यह मौका मैं पा रहा हूँ ।

पुरानी कहानीमें लिखा है कि—"कछुआ उस मूर्ख जीवको कहते हैं, जो जीवन-होड़की दौड़, परम मन्द गतिसे दौड़े !"

"और खरगोश—" किताबोंकी कहानीके मतसे—"उस जानवरको कहते हैं, जो (अहङ्कार-मय) जङ्गली पथपर चतुरता और तेजीसे 'रेस' कर सके ।"

मगर, पुरानी कहानीकी दौड़में "विनर" हुआ मन्द मति-गति कछुआ ही !

चतुर शिरोमणि, वायु-गति खरगोशजीको किसी "प्लेस" में भी नहीं जगह मिली !

"कछुएके जीतनेका सही सबब", कहानीके कथनानुसार— "है उसकी एकाग्रता और अविरत-गति ।"

और खरगोश महोदयकी पराजयका कारण बतलाया गया है उनका—'मिथ्याभिमान, असावधानी और मूर्खता ।"

चमत्कारमें उक्त कहानीको मैं किसी भी छाया-वादी रचनासे कम नहीं समझता ।

जिस तरह, अनायास ही, छायावादी हरएक आदमीको "मदसे भरा बोतल" प्रमाणित कर देता है, वैसे ही; उक्त कहानीमें कछुएको खरगोश बना दिया गया है।

कमाल है पूरा......!

मेरे अस्त-व्यस्त, किन्तु प्रचण्ड, प्रवाहको परखकर उन दिनों, कितने ही "कछुओं" ने ज्ञानसे गर्दन हिलाते हुए कहा था—"ओह ! आप तो खरगोश हैं !"

सुनते ही, पैदायशी खरगोशोंके कान खड़े हो गये थे। पूँछें—पाँच-पचे-पच्चीस बार पृथ्वीपर अप्रसन्नतासे पटक तथा तीखे-पंजोंसे लम्बी मूँछोंको फटककर उन्होंने विरोध किया—"कौन कहता है इन्हें खरगोश ? जरा ये पूँछ तो दिखावें अपनी—या लम्बी मूँछ ही ? ये खरगोश नहीं, कछुआ हैं।"

मैंने सोचा, पुरानी कहानीमें तो कछुआ ही महान् और "हीरो" है। अतः कछुआ कुछ बुरा नहीं।

तर्कने विवेक पेश किया, कहानी तो कोरी कल्पना है—नहीं तो, कछुआ भला खरगोशको 'रेस' में जीतेगा ? बाइसिकल और ठेलेकी दौड़ ?? अस्तु......

मैंने उन्हें ही अपना हित, मित्र और प्रिय माना, जिन्होंने मेरी गतिकी तुलना खरगोशसे की।

"कछुआ" कहनेवालोंको राग और द्वेषसे मैंने गधा समझा।

मगर, दुर्भाग्य ! महज एक दुमकी कमीसे मतिवान मैं—गतिवान हैवान न बन सका ! और सहम गया उक्त अभाग्यसे। वैसे ही जैसे रीछके चित्रसे बच्चा !

आखिर, अपने अभावोंको भुनाकर भरपूर मूल्य भर देनेके बाद, मुझे भी बाजारका "भाव" मालूम हो गया !

मैंने सोचा कि, इस या उस कमीकी वजहसे जब "कछुआ" या "खरगोश" बन ही नहीं सकता, तब, मैं "रेस" का रास्ता बनूँगा।

इसी जन्ममें, इसी देहको मिट्टीमें मिलाकर—क्यों?—मैं बखूबी वह रास्ता बन सकता हूँ।

वही, जिसपर संसारके "खरगोश" और "कछुए" प्रतिस्पर्द्धासे पागल होकर दौड़ें।

साथ ही, वही, जिसके अन्चञ्चल प्राणोंको सारे जाग्रत जगत्के बच्चे अपने चपल कमल-चरणोंसे सरस मुखरित करें। सभी, किसी-न-किसी मोहक—"रेस" में, मेरी छातीपर आशासे दौड़े, कोई "विनर" हो और कोई "प्लेस" भी न पावे!

ऐसे ही रास्तेका-सा बहुरंगी, कठोर और जड़-जीवन मैं भी पाऊँ—दे सको तो, यही मुझे वरदान दो—हे साहित्यके "कछुओ" और "खरगोशो!"

अब मैं रास्ता बनना चाहता हूँ। मेरा दावा है, अब मैं रास्ता बन रहा हूँ।

उक्त दावेका जो "अर्थ" हो, वही मेरी भूमिकाका मुख्य मतलब है और—

जिसकी समझमें जो आ जाय वही—बस—"अर्थ" है।

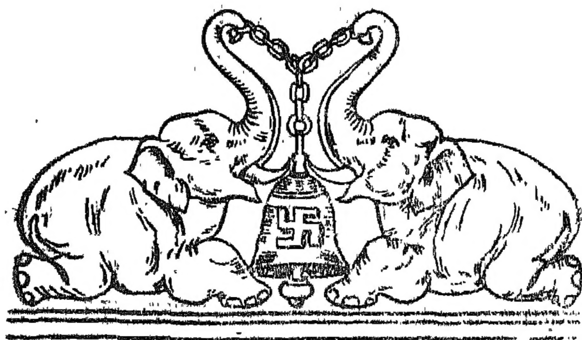
और सब "व्यर्थ"

महाशिवरात्रि,
कलकत्ता।
११–३–३७

पाण्डेय बेचन शर्मा, "उग्र"

शीर्षक-सूचना

घंटा



जर्मनीमें

जर्मनीकी राजधानी बर्लिनसे ५ मील उत्तर एक कस्बा है, जिसका नाम रोमन लिपिके M. अक्षरसे शुरू होता है।

सन् १९१३ ईसवीकी १३ वीं दिसम्बरको १३ बजे दिनमें कस्बा 'एम···' की एक विशाल विज्ञानशालामें दो वैज्ञानिक जर्मन गम्भीरतासे बातें कर रहे थे···

"पुस्तक पाली भाषा में है।"

"आयी है, नेपाली राजसे? अफसोस है कि मैं पाली या

संस्कृत नहीं जानता;—मगर, पाली और नेपालीमें मैं समझता हूँ, जरूर कोई न कोई रिश्तेदारी होगी !"

"हा हा हा हा !" पहला जर्मन ऐसे हँसा जैसे बादल गरजे—"तुम आर्य होकर संस्कृत नहीं जानते ? पाली हिन्दोस्तानकी एक पुरानी भाषा है और नेपाली एक पहाड़ी बीहड़ रियासत... ।"

"कहाँ है वह पुस्तक ? कैसी है वह···?"

हजार साल पुरानी··· । एक तरहके पत्रोंपर किसी दरख्तके रससे लिखी हुई । मगर, लिखाई इतनी साफ कि हमारे जमानेके छापेखाने उन हाथोंको चूम लेना चाहेंगे—"

"ताज्जुब···!"

"सबसे ज्यादा ताज्जुब उन बातोंका है, जो उस पुस्तकमें लिखी हैं...।"

"मैं उस किताबकी बातें जाननेके लिये बेहद बेकरार हूँ···"

इसी वक्त, आगन्तुककी सूचना देनेवाली बिजलीकी घंटी एक बार तनिक, और दो बार तीव्र बजी ।

"बादशाह सलामत···!"

"कैसर—?"

"हाँ, सावधान ! जहाँपनाह किताबके साथ…"

दोनों बाक़ायदे उठ खड़े हुए।

पहले जर्मनने अदबके साथ दरवाजा खोलकर आगन्तुकको सैनिक-ढंगसे सलाम किया।

और लम्बा, काला कोट पहने एक तगड़ा, रोबीला आदमी अन्दर दाखिल हुआ।

"हुजूर तनहा तशरीफ लाये ! किसी जाँनिसारको साथमें न लिया !"

"आर्य लोग डरते नहीं, सत्य और आदर्शके लिये कालके मुखमें भी मुस्कराते हैं।"

"गरीबपरवर सच्चे आर्यवीर हैं।"

"दूसरी बात यह !" कैसरने सहज गम्भीरतासे कहा—भेदकी बात जहाँतक कम लोग जानें—बेहतर। हिन्दुस्तान कौन जा रहा है ?"

"कीलर।" दूसरे जर्मनने कैसरकी झुककर ताजीमकी।

सरसे पैरतक घूरकर कैसरने हेर कीलरको देखा।

मानो कीलरकी जीवन-पोथीको जाँचने लगे।

फलतः कैसरकी खड़ी मूछोंके नीचे तेजीसे एक मुस्कुराहट चमक गयी !

कीलरके पास जा, उसकी पीठपर हाथ फेर, कैसर बोले—"तुम जानते हो? मुस्तैदी, जाँनिसारी और वफादारीका इनाम, कैसर दिल खोल कर देता है।"

"हुजूर गरीबपरवर हैं।" कीलरने दर्बारी सरलता दिखायी।

"हिन्दोस्तानमें तुम्हारा काम क्या है, यह भी तुम जानते हो न?"

"अच्छी तरहसे हुजूर!"

"मैंने इस पुस्तकको बग़ौर पढ़ा है और समझदारोंके साथ समझा भी है। मैं समझता हूँ, वह चीज बम्बई शहरके आसपास कहीं होगी। मगर तुम ढूँढ़ना सारे भारतमें।"

"बिलाशक सरकार।"

"वह चीज ज्योंही तुम्हारे हाथ लगे—मुझे हवाई तार देना! और सावधानीसे रहना! अंग्रेज बड़ी चतुरतासे उस देशपर राज करते हैं। कहीं फँस न जाना।"

"अंग्रेज लोग हुजूर! बनिये हैं। असिल होशियारीमें हम आर्योंकी छायातक नहीं छू सकते।"

"सच बात!" नफरतसे कैसरने कहा।

"बात!" बन्द कमरेकी प्रतिध्वनि बोली!

आर्य कौन ?

"जवानी जो इठलाती है
झकोरोंसे हिल जाती है..."

'वाह ! वाह !!" महराज संग्रामपुरने गवैयेको दाद दी।

और उचित सम्मानसे कलाकारके मुखपर जो गम्भीर आनन्द झलकता है; उसीसे सजकर गायक लहराने लगा—

जवानी जो खुल जाती है
अखिलमें खिल-खिल जाती है
जवानी जो दिल पाती है
असिलमें मिल-मिल जाती है
झकोरोंसे हिल जाती है
जवानी जो इठलाती है

महाराज संग्रामसिंहका गवैया एक फ्रेंच जहाजके

पहले दर्जे के डेकपर उक्त गाना गा रहा था, अचानक चारों ओरसे बादल घिर आये।

हवा भी मानों गानेसे सनक उठी !

महाराजके पास गवैयेके अलावा एक निहायत नाजनीन फ्रेंच-सुन्दरी बैठी थी, जो हाथके प्यालेसे उनको नशा पिला रही थी और आँखोंसे दिलको गुदगुदा भी रही थी।

महाराजके सामने फ्रेंच पोशाकमें, फ्रेंचकट-दाढ़ीवाला, कोई लम्बा, तगड़ा फिरंगी भी बैठा था और हिन्दू गवैयेका गाना गौरसे सुन रहा था।

"आपको आनन्द आया मांशियर मोपले !" महाराजने फ्रेंच भाषामें पूछा।

"भरपूर...श्रीमान् !" मोपलेने जवाब दिया—"हिन्दोस्तानके गाने-बजानेका क्या कहना !"

सुन्दरीसे सुरा ले जरा 'सिप' कर श्रीमान् बोले—"गाना-बजानाही नहीं, मांशियर ! हिन्दोस्तानकी एक-एक चीज अजीब होती है।'

"मगर..." फ्रेंच साहब बोले—हिन्दोस्तानके आदमी निहायत ऐय्याश, कमजोर और गुलाम-तबीयत होते हैं। अगर मैं गलत कहता हूँ, तो आप सुधार सकते हैं।"

"बिलकुल झूठ !" मूछोंपर हाथ फेरते महाराज संग्रामसिंह बोले,—"हमारे देशके रहने वाले आर्य हैं और बुज़दिली, शरीरका मोह, ग़ुलामी आर्य जानते ही नहीं।"

मांशियर मोपले महाराजके तीव्र खण्डनसे विचलित न हुए।

"आर्य ? और हिन्दोस्तानी ? आप भी खूब फर्माने लगे। श्रीमान् ! आर्य गोरे होते थे—आठ फ़ीट ऊँचे, बली और सुन्दर होते थे। पुराने यूनानी या आजकलके जर्मन लोग जैसे हैं—वैसे होते थे।"

"मगर, मगर मैं आर्य-कुल-मार्तण्ड, महा-माहेश्वर महाराज संग्रामपुर हूँ..." मोपलेके कानोंमें गोया महाराजकी बातें पड़ीही नहीं।

"आपके हिन्दुस्तानी, जेबी कुत्तोंकी तरह कुत्ता-वंश-कलंक होते हैं। जरूरतपर न तो जोरसे भूँक सकें और न काट।"

महाराजको फ्रेंच साहबकी बातें अच्छी न लगीं।

नशेबाज राजा केवल चापलूसी सुन-समझ सकता है। सच, सादी बात उसके लिये टेढ़ी खीर है। तहजीबको भूल, सुन्दरीको बग़लगीर कर श्रीमान् एक-ब-एक उठ खड़े हुए।

"हवा सनक रही है; जहाज हिल रहा है, डियर ! हम लोग भीतर चलें ?"

"लहरें—लहरें ! सुन्दरी थिरक उठी, उसकी आँखें भी चूर थी—श्रीमान्, समुन्दरकी गोदमें रहनेवाले तुफानोंमें मौजें मारते हैं। जरा डेकके किनारेसे देखिये !"

महाराज झूमते हुए, सुन्दरीके साथ, डेकके किनारेकी तरफ लड़खड़ा चले।

मगर मांशियर मोपले भी अजीब बहसी निकले। उन्होंने महाराजका पिण्ड फिर भी न छोड़ा।

"आर्य था अर्जुन—जिसके धनुषपर वाण देखकर इन्द्रकी भी जान सूख जाती थी। आर्य था बाबर।"

"बाबर ? आप भी कहाँ भटके ?" महाराज जरा रुक और मुड़कर मोपलेके ऐतिहासिक ज्ञानकी मरम्मत करने लगे—"बाबर आर्य नहीं, अरब था। मुसलमान ! हा हा हा हा !"

"मैंने सुना है, आर्यके माने श्रेष्ठ होता है। बाबर घोड़ेकी पीठपर एक सौ बीस मीलकी दौड़ मारता था। तलवारका धनी और खुदाका सच्चा सेवक था। हमलोग ऐसेको ही आर्य समझते हैं।"

"ओह ! डियर !!" फ्रेंच-सुन्दरी महाराजसे चिपक

गयी—"कैसी नीली, चमकीली, छबीली लहरें ? देखो ! देखो ! कितनी बड़ी मछली—अहा हा हा !"

मछली देखनेको सुन्दरी ज्यों ही झुकी, त्यों ही तूफानके एक तेज झोंके ने जहाज को जरा टेढ़ा कर दिया।

और लो ! फ्रेंच-सुन्दरी नशेसे लड़खड़ाकर जहाजके नीचे झुक गयी।

महाराजने उसे सँभालना चाहा—मगर थे वह नशेमें। फलतः सुन्दरी के हाथ राजाका दुपट्टा लगा। वह सिनेमाके खतरनाक नज्जारेकी तरह झूलने लगी।

"ओह ! अह !! उँह !!!" महाराजका गला फँस गया ! वह दुपट्टा ढीला करने लगे ! मोपले और गवैया घबरा कर मददको लपके !

"दुपट्टा न खोलो ! नहीं तो औरत दरिया में डूब जायेगी। राजा !—महाराजा !" फ्रेंच साहबने ललकारा।

मगर, छप-छप-छप !!

अपना गला छुड़ा, दुपट्टेके साथ, महाराजने सुन्दरीको समुद्र में डाल दिया। देखने लायक था इस वक्त मांशियर मोपलेका रूप—लाल, उद्वेलित !

राजाका गला दाब वह बिगड़े—"नीच ! बुजदिल ! तू ही आर्यकुल-मार्तण्ड महामाहेश्वर है ?"

एक धक्केमें फ्रेंच-मुखी महाशयने राजा संग्रामसिंह को समुद्र में ठेल दिया और दूसरे क्षण वह खुद नीचे कूद पड़ा।

जहाज में कोलाहल मच गया। खतरेके घण्टे बजने लगे। लाइफ़ बोट नीचे उतारी गयी और किसी तरह तीनों प्राणी बचाये जाकर ऊपर उठाये गये।

लेकिन हयँ !!

मांशियर-मोपले की दाढ़ी दरियामें ही रह गयी—उनकी लम्बी नाक जरा छोटी हो गयी !!

अब फ्रेञ्च कप्तानने कुछ समझा ! उसने मोपलेसे पूछा—"क्या मामला है ? तुम कौन ?"

"मोपले मांशियर !"

"धोका। कोई जासूस है—इसकी तलाशी लो।"

तलाशी में मांशियर मोपलेके पास सन्दिग्ध तो कुछ भी न निकला—हाँ, उनके हाथपर जर्मन अक्षरों में लिखा था।

"हेर कीलर।"

"जर्मन है।" कप्तान गरजा।

"फ्रेंच है—पाजी।" राजासाहबने जरा साँस ली।

"बहादुर है !" सुन्दरी और राज-गायकने एक स्वरमें कहा।

"दुश्मन है ! इसको गिरफ्तार कर कैदी-केबिनमें ले जाकर बन्द करो ।"

फ्रेंच कप्तान दांत पीसकर चिल्लाया ।

शुभांशा

बम्बई शहर से २५-२६ मील पश्चिम एक कस्बा या गांव है—"बोरीवली"।

बोरीवली के पास-पड़ोसकी जमीन ऊभड़-खाभड़ 'कंकरीली और जङ्गली है।

विन्ध्याचलके बीहड़ किन्तु बिखरे अञ्चलमें जैसे ऐतिहासिक पुराना कस्बा चुनारगढ़ आबाद है, ठीक वैसे ही पश्चिमी घाटकी छोटी-छोटी पहाड़ियों में बोरीवली बसी है। और चुनारगढ़ जितना अद्भुत ऐतिहासिक है, बोरीवली उससे एक इञ्च भी कम नहीं।

चुनारके किलेका आरम्भ चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यसे है या शककर्त्ता, अद्भुतकर्मा, भर्तृहरि-अनुज महाराज विक्रमादित्यसे? शेरशाहसे है या खुदापरस्त बादशाह हुमायूँ-

से ? हिन्द-प्रदेश (यू० पी०) के वीर महाकाव्य 'आल्हा-खण्ड' के महावीर 'इँदरमन' ने जो अपनी वीरांगना बहन 'सोनवाँ' का व्याह अपना अपमान मानता था और शादी-के लिये आनेवाले उन्मादी राजकुमारोंको ललकार-ललकार कर, हाहाकार-तलवार-धार-पार उतार देता था—क्या चुनारगढ़को बनवाया था ? या प्रकाशित पद्मिनी के प्रख्यात पतङ्ग-राज अल्लाउद्दीन खिलजीने ? चेतसिंह, वारेन हेस्टिंग्स, वाजिदअली शाहने तो चुनारगढ़को नहीं बनवाया ?

नहीं—नहीं। तुम इतिहासको नहीं जानते।

हाँ—हाँ ! इतिहास सत्यको नहीं जानता।

अस्तु; बोरीवलीके 'माउण्ट पोइसर' की और पास-पड़ोसकी हैरतअंगेज गुफाएँ कब की हैं ? किसकी बनायी हैं ? कौन कह सकता है ?

माउण्ट पोइसर (बोरीबली) की गुफामें कुमारी महा-माता मरियमकी मूर्ति है—'मारबली !'

मूर्तिके पीछेकी दीवार और ऊँचा चबूतरा ऐसे मालूम पड़ते हैं गोया कलकी कला है। लेकिन गुफाके बाहर-भीतर-का वायुमण्डल आज भी युगों पुराना दिखता है।

माता मरियमकी मूर्तिके पीछेकी दीवार से एक अन्ध-

कूपवत् गुफामें छिपी चन्द पुरानी मूर्तियाँ और भी हैं—'मारबली' नहीं, पहाड़में खुदी हुई। किसी तरह अगर वे बोल सकें तो ठीक-ठीक पता चले कि बोरीवलीकी गुफाएँ किसकी बनायी हैं ?

क्या भार्गव भगवान् परशुरामने आततायियोंके विनाशार्थ अपने प्रचण्ड परशुका पानी परखनेके लिये इन पहाड़ियों को तराश दिया था ?

या रामारि रावणके भयसे भागे, अभागे अमरोंने ऐसी अमर-रचना की थी ?

पुरानी मूर्तियाँ पौराणिक हैं—'ब्राह्मण' या 'बौद्ध' कैसे कहा जाय ?

माता मरियमका डर लगता है, जिन्हें शायद विजयी पुर्त्तगालियोंने वहाँ पधराया है।

सो—कहानी सन् १९१४ ईस्वीकी है—चैत मासकी।

बोरीवलीके पास ही पहाड़ोकी तलेटीमें एक छोटा-सा 'पैगोडा' या बौद्ध-मन्दिर था।

मन्दिरमें न जाने कबसे एक चीनी भिक्षु रहता था।

उसका नाम—शुश्रंशाँ, चुश्रंचाँ या कोंकां—क्या नाम था, उसका ? अंग्रेज जब उसके पास आते, तब शुश्रंशाँ कहकर पुकारते।

बोरीवलीके बच्चे चीनी-भिक्षुको घेर कर अक्सर जब उसका नाम पूछते, तब वह दिव्य-सरलतासे जवाब देता,—

"चु अं चाँ।"

"कों-कां!" मुँह चिढ़ाकर बच्चे हँसते!

भिक्षु न तो भिक्षाटनको निकलता और न मन्दिरमें ही किसीसे कुछ लेता था।

प्रातः सायंकाल नहाने-धोनेके लिये वह नदी-तट तक जाता और बस।

एक बार किसी साहबने भिक्षु चुअंगसांगसे पूछा—

"आप पैगोडासे दूर क्यों नहीं जाते?"

"मैं पहरेदार हूँ!"

"किसका?"

"उस घण्टेका—देखो! वह!"

अंग्रेजको चीनी भिक्षुने मन्दिरके बाहर दो हाथियोंके सुण्डोंसे लटकता एक बड़ा घण्टा दिखलाया।

"घण्टेकी पहरेदारी? क्या खूबी है इसमें?"

"...यह तो मुझे मालूम नहीं। डेढ़ हजार बरसोंसे कोई-न-कोई चीनी श्रमण इस मन्दिरका रखवाला होता है

और इस घण्टेके लिये । मैंनें इतना और भी बुजुर्गोंकी जुबानी सुना है कि यह घण्टा विश्व-विख्यात सम्राट् अशोक-का बनवाया हुआ है और चामत्कारिक गुणोंसे भरा है !"

"नानसेन्स !"—अविश्वासी साहबने कहा।

जाँच-पड़ताल

फ्रेंच जहाजके कप्तानने राजा संग्रामसिंह और उस विलायती नाजनीनसे मांशियर मोपले या हेर कीलरके बारेमें कई सवाल किये ; क्योंकि, मोपले फ्रेंच चित्रकार बनकर राजा साहबके साथ उनका राजमहल सजानेको जा रहा था।

"पहले मोपलेसे आपकी भेंट कब और कहाँ हुई ?" फ्रेंच कप्तानने दरियाफ्त किया।

"मेरा ख़याल है......।"

"होटेल डि लक्स में"—राजासे पहले फ्रेंच सुन्दरीने जवाब दिया—"पहली मुलाक़ातके दिन ही मांशियर मोपले-ने मेरी और महाराजकी एक-एक तस्वीर ऐसी बनायी कि हम खुशीसे खिल उठे।"

अबकी कप्तानने सुन्दरीको जरा तरेरकर ताका—

"लेकिन...महोदय ! महाराज तो परदेशी हैं,—आपने उस मक्कारको क्यों नहीं पहचाना ?"

"लेकिन महोदय !" सुन्दरीका उत्तर भी तैयार था—"मैं तो औरत हूँ, आपकी कम्पनीने, जिसके जहाजपर मोपले आया, हमारी सरकारने, जिसने जासूसके लिये पासपोर्ट दिया, उसको क्यों न पहचाना ?"

"जर्मन जासूस शैतानके भी कान काटनेवाले होते हैं।" खिसियाकर कप्तान बोला—"मैंने हवाई तारसे अपनी सरकारको सारी खबर भेज दी है। हमारा जहाज तो हिन्दुस्तान होते हुए शंघाई जानेको निकला है।"

इसी वक्त कप्तानके केबिनकी हवाई मेशीन, गुप्त-ढङ्गसे कोई खबर देने लगी।

राणा संग्रामसिंह उस अद्भुत मेशीनको आँखें फाड़-फाड़कर इस तरह देखने लगे, जैसे देहाती छोकरा ग्रामोफ़ोन देखे......।

"चलो ठीक हुआ !" खबर सुनकर कप्तान बोला—"कल मेरा जहाज स्वेज नहर पार करेगा और उस पार हमारी गवर्नमेण्टका दूसरा जहाज 'डि मम्मी' कैदी कीलरको लेनेके लिये तैयार मिलेगा। राजा साहब !"

"जनाब !"

"इस मामलेमें शायद आपको भी गवाहकी हैसियतसे फ्रांस जाना पड़े !"

"अरे नहीं यार !" राजा संग्रामपुर घबरा उठे—"मुझे अपनी रियासतके इन्तजामसे दमतक मारनेकी फुर्सत नहीं।"

मगर, आप एक जर्मन जासूस अपने साथ हिन्दोस्तान लिये जा रहे थे ? इस बातपर तो अंग्रेजी सरकारतक आपसे जवाब तलब कर सकती है।"

"अंग्रेजी सरकार मुझसे जवाब तलब करेगी ? अरे नहीं हो ! मैं बिलकुल गाय—बिना सींग-पूंछकी हूं।"

"कुछ भी हो—आपने दो गवर्नमेण्टोंमें लड़ाई करानेका सामान इकट्ठा कर दिया है। जानते नहीं, आजकल यूरोप आपसके कलहोंसे, सूखे पुआलका ढेर हो रहा है।"

"मुझे बचाओ कप्तान साहब !" राजाने कप्तानके कानमें कहा,—"मैं पचीस हजार रुपये तुमको देता हूँ। मगर, इस वाक़यासे मेरा नाम बिलकुल अलग कर दो।"

कप्तान तो राजी नहीं होता था—उसने कहा भी कि—"हमारे मुल्कमें रिश्वत हराम मानी जाती है"—मगर, महाराजकी मददमें फ्रेंच सुन्दरी तैयार हो गयी। उसने बड़ी नाजोअदासे कैप्टनको समझाया। "हमारे

देशमें रिश्वत हराम है, मगर राजासाहब अपने क़ायदेसे इसको बिलकुल हलाल—ऊपरकी आमदनी नज़र—या भेंट कहते हैं।

"फिर 'रिश्वत' हराम होगी 'रुपये' नहीं। इस ज़माने-में हमें जिधरसे जितनी भी चाँदी मिल सके, ले लेना चाहिये।"

"महोदया!" कप्तान ज़रा सन्तुष्ट हो बोला—"यह आपकी बात है, जो मैं महाराजको छोड़े देता हूँ··· नहीं तो!"

इन बातोंके तीसरे दिन वह फ्रेंच जहाज़ स्वेज़ नहर-से बाहर अरब-समुद्रमें आया। कप्तानने देखा फ्रेंच—झण्डा लगाये एक जहाज़ दूरपर लङ्गर डाले डटा है—

दोनों जहाज़ोंमें दोस्ताना सलामी हुई।

दूसरे जहाजका कप्तान एक नावसे इस जहाज़पर आया।

"फौरन कैदी जर्मनको मेरे हवाले करो।" कप्ताननेकप्तानसे कहा—"हवाई तारसे हमें हुक्म मिला है कि जासूसको लेकर फौरन पेरिस भेजो!"

थोड़ी ही देरमें हेर कीलर, दूसरे जहाजपर पहुँचाया गया। और हमारा जहाज़ बम्बईकी तरफ धुआँधार भागा।

दूसरे दिन बम्बई क़रीब आ गई। एक तीसरा जहाज नजर आया। दोनों जहाजोंमें फिर सलामी हुई और इस जहाजके कप्तानने संकेतसे हमारे जहाजको रोका।

उसका कप्तान एक तेज बोटपर हमारे जहाजपर आया और कप्तानसे अफसोस जाहिर करने लगा।

"हम लोगोंको कलही आपसे मिलकर क़ैदी ले लेनेका हुक्म था; मगर हिन्द महासागरके तूफानकी वजहसे देर हो गयी......"

"आपके जहाजका नाम ?" कप्तानने दरियाफ्त किया।

"डि ममी" जवाब मिला।

"डि ममी ! मजाक रहने दीजिये—'डि ममी' जहाज मुझसे कैदी लेकर कल चला गया।"

"धोका ! धोका !!" दूसरा कप्तान चिल्लाने लगा—"मेरा जहाज 'डि ममी' वह खड़ा है।"

"क्या ?" इस जहाजका कप्तान कुछ चकराया...!

मालूम पड़ता है, दुश्मनोंने तुमको धोका दे अपना आदमी छुड़ा लिया !"

"डि ममी" के कप्तानकी बातोंसे हमारे जहाजमें सनसनी फैल गयी !

अतिथि

जिस दिन भिक्षु सुअङ्ग सांगने देवप्रिय सम्राट् अशोक-का घंटा उस अंग्रेजको दिखलाया और उसके चमत्कार पूर्ण होनेकी चर्चा की, उसी रातको भिक्षुने एक भयानक सपना देखा।

देखा, कोई विलायती, बड़ा, शिकारी कुत्ता उस घंटेपर पेशाब कर रहा है।

अपवित्र होते ही वह घण्टा वज्र-ध्वनिसे घनघनाने लगा।

लो—लो! चारों ओर अन्धेरा घनीभूत हो गया! दिन-दहाड़े सितारे नजर आने लगे। जमीनके अन्दर घड़ड़-घड़ड़ भूकम्प गरजने लगा।

वह देखो! दसो दिशाएँ आगकी लपटोंसे खेलने लगी—त्राहि! त्राहि!...

प्रलयका प्रकाण्ड-ताण्डव होने लगा ! सपनेसे संन्यासी काँपकर उठ बैठा और लगा जोर-जोरसे गौतमका नाम लेने—कुछ जपने भी लगा।

एकाएक चीनी भिक्षु कुछ समझ न सका कि ऐसे भयावने स्वप्नका अर्थ क्या हो सकता है। "क्या घण्टा बजेगा ? क्या उसके बजनेसे संसारमें आग लग जायगी ? हे तथागत ! हे गौतम !" भिक्षु नदी तटकी तरफ चला, नहानेके लिये।

सुअङ्ग साँग जब नहा-धोकर पैगोडाको लौटा, तब किसी युवक संन्यासीको घण्टेके पास खड़ा देख, उसको बड़ा भय और ताज्जुब हुआ।

"आप कौन ? बिना पूछे उस घण्टेको क्यों देखते हैं ?"

"महात्मन् !" संन्यासीने नम्रता दिखायी—"घूमता-फिरता अनायास इधर ही आ निकला हूँ। बहुत ही रमणीक है यह स्थान—इसकी शोभापर मैं मुग्ध हो गया हूँ। चार दिन रहकर, फिर अपने रास्ते लगूँगा।"

"मगर, यह धर्मशाला नहीं, आप ब्राह्मण संन्यासी हैं, अतः यह आपका देवालय भी नहीं।"

"भिक्षु,—मैं फिलहाल तुम्हारा अतिथि हूँ। तीखी बातें न करो ! इस जगहकी शोभापर मैं रीझ उठा हूँ।"

"रीझना या खीझना, शोभा या अशोभा, मान या अपमान, हम वैरागियोंकी चीज नहीं है—संन्यासी ! तुम कहीं और आसन जमा सकते हो। यहाँ मैं एकान्त-वास करता हूँ।"

मगर जवान संन्यासी वहाँसे न हिला। अतिथिके नामपर एक बार जो डटा, तो हटानेवालेकी ऐसी-तैसी ! टिक गया !

दयालु चीनी भिक्षु भी, दस-पाँच दिनों बाद, संन्यासी-की ओर से उदासीन हो गया।

उसने सोचा—"अपना क्या जाता है, पड़े रहने दो !"

बोरीवलीके पासकी एक काठियावाड़ी ग्वालिन चीनी-भिक्षुकके लिये आधा छटांक चावल और सवा सेर दूध नित्य लाती थी।

संन्यासीके आनेके बादसे चावल आधा सेर कर दिया गया। इन चीजोंका दाम भिक्षु सुअङ्ग सांग अपने पाससे न जाने कहाँसे—देता था।"

भिक्षुने हाथ जोड़कर कई बार संन्यासीको समझाया कि हाथियोंके सुण्डोंपर झूलते घण्टेसे दूर ही रहना अच्छा है; क्योंकि वह सम्राट् अशोकका बनवाया और करिश्मोंसे भरा है।

भिक्षुने संन्यासीको होशियार किया—"सावधान! घण्टेके आस-पास कभी थूकना-मूतना नहीं ; नहीं तो अनर्थ हो सकता है।"

एक दिन जब सुअङ्ग सांग नहानेको गया था, वही अविश्वासी अंग्रेज, संन्यासीके पास चुपकेसे आया।

"कुछ पता चला ?"

"ज्यादा तो कुछ नहीं हुजूर ! चीनीका कहना है कि ना-पाक होनेसे घण्टा गजब ढा देगा।"

"बाश !" साहबने फिर भी न माना—"मगर जाँचना होगा। तुम घण्टेपर पेशाब नहीं कर सकते ?"

"मुमकिन है, जान चली जाय हुजूर !"

"इस घण्टेका भेद जानना ही चाहिये। किसी तरह तुम इसको नापाक करो ! समझा ?"

"ऐसा ही कुछ करना होगा सरकार ! अच्छा—दूधवाली आयी, आप खिसकिये। मैं सब ठीक कर लूँगा।"

साहब सरका—और दूधवाली आयी। संन्यासीने देखा—आज दूधवालीकी जवान छोकरी है। एक क्षणमें उसने कुछ सोचा।

"आज तू आयी ? तुझे तो मैंने आज ही—"

"मैं बेटी हूँ—अपनी माँ की। जरूरी कामसे आज अम्माँ बोरीवली गयी है। कितना दूध दूँ?"

"तीन सेर। देख, बर्त्तन वहाँ, उस घंटेके पास...जा, वहीं नाप दे!"

जवान छोकरी मटकी सरपर ले-घाघरेमें कमर नचाती घण्टेकी तरफ चली—संन्यासी भी उसके पीछे-पीछे उसकी जवानीको आँखोंसे पीता हुआ चला।

हाथियोंके पीछे पहुँचकर ग्वालिनने देखा—वहाँ बर्त्तन एक भी न था...

"बाबा! बर्त्तन यहाँ नहीं है।"

"मैं आया।" और ग्वालिनके पास कामान्ध, नामधारी संन्यासी, लपका आया।

बिना एक शब्द भी बोले, संन्यासीने ग्वालिनको खींचकर छातीसे लगा लिया और बरजोरी उसका अधर रस पीने लगा!

इधर स्नान कर, भिक्षु सुभद्र जो लौटे तो मन्दिरको सूना देखा।

"महाराज! संन्यासी—देख!"

"छोड़ो! मुझे!" ग्वालिनने उस नीच संन्यासी-वेसधारीसे कहा।

"मेरी जान ! मेरी जान !" पागल प्राणी ग्वालिनसे लिपटा, जमीनपर लुण्ड-मुण्ड होता दोनों दिग्गजोंसे लटकते घण्टेके नीचे पहुँच गया !

इसी वक्त आस-पास की जमीन हिलने लगी, घनघोर शोरसे घण्टा बजने लगा। पापी नकली संन्यासी और ग्वालिन जहाँके तहाँ काँपकर सटे—रह गये।

इसी वक्त हाथियोंके सुण्ड टूट गये और एक सौ एक मन वजनी अष्टधाती घण्टा संन्यासीकी पीठपर घोर-शोरसे गिर पड़ा।

ग्वालिन, चीखकर दूर भाग—बेहोश हो, कटे रूख-सी गिर पड़ी।

घण्टेके पास आ, चीनी भिक्षुने देखा—वह अपवित्र हो चुका था। पापी संन्यासी मर चुका था और बेइज्जत ग्वालिन बेहोशीमें लम्बी सांसें ले रही थी।

भयसे काँपकर माथेपर हाथ रख, घण्टेके पास चीनी भिक्षु बैठ गया।

हे तथागत !

धम्मं शरणं गच्छामि

संघं शरणं गच्छामि

बुद्धं शरणं गच्छामि !

क्रोधी कैसर

उसी जर्मन प्रयोगशालामें जहाँ आरम्भ में हेर कीलरको कैसरने हिन्दोस्तान जानेका हुक्म दिया था, आज फिर दो ही आदमी दिखाई पड़ रहे हैं।

स्वयं कैसर, तनकर रोबसे कुर्सीपर बैठे हैं और वह बूढ़ा वैज्ञानिक अदबसे आगे खड़ा है।

कैसरके सामने बहुत-सी हिन्दोस्तानी कारीगरीकी चीजें बाकायदे रखी हैं—जिसमें बनारस और बङ्गालके बने अनेक दीवट, कुछ मिर्जापुरी बर्त्तन और अनेक पुराने रंग-बिरंगे घण्टे भी हैं।

"ये सारी चीजें बेकाम हैं।" कैसर जरा नाराज मालूम पड़े।"

'हेर कीलरका काम अभी खत्म नहीं हुआ है। उसके

गुप्त संवादसे पता चला, कि अभी बम्बई तक वह पहुँचा भी नहीं।"

"फ्रेंच जहाज़से बचानेके बाद कीलरको हिन्दोस्तान के किस भागमें उतारा गया?"

"बङ्गालमें हुजूर!" बूढ़ा गम्भीरतासे बोला—"हमारे जहाज़ने पहले तो रोज़गारी फ्रेंच जहाज़का नक़ली रंग भर और झण्डा उड़ा, कीलरको छुड़ाया—बादमें पानी-के अन्दर चलनेवाली तेज़ 'सबमेरिन' नावमें वह बङ्गालकी खाड़ीमें एक व्यापारी जर्मन जहाजपर पहुँचाया गया..."

"मैं..." नाक फुलाकर कैसर बोले—"इस हेर कीलर से निहायत नाखुश हूँ। अगर हमने उसके पीछे भी इन्त-ज़ाम न किया होता, तो वह फ्रेंच जहाज़पर ही मर चुका था..."

"हेर कीलरके गुप्त पत्रमें यह सफ़ाई है कि, एक स्त्रीको बचानेके लिये वह समुद्रमें कूद पड़ा था। वह गिर-फ्तार हुआ जरूर—मगर, बहादुरीसे न कि मूर्खताके कारण...!"

"मैं इसे मूर्खता मानता हूँ" कैसर गरजे—"हरि भजन-को चलकर जो कपास ओटने लगे, वह जर्मनोंके आर्य-

संघमें रहने लायक़ नहीं...सैनिक नियम कठोर होते हैं और कठोरता ही सैनिकता है।"

"सत्य बात है आर्य !" बूढ़ा वैज्ञानिक बोला,—"लेकिन अभी हेर कीलरका काम बाक़ायदे चल रहा है। एक जर्मन खोजीकी हैसियतसे वह भारतकी पुरानी चीजें हर एक ऐतिहासिक जगहपर खोज और ख़रीद रहा है। उसपर अंग्रेजी सरकारका सन्देह भी नहीं है।

"मगर—मगर" कैसर रुखाईसे बोले,—"कीलरने अब तक जो कुछ भेजा है—फिजूल ! मुझे जो घण्टा चाहिये—उसके बारेमें उस नेपाली...पाली-पुस्तकमें लिखा है, कि जिस बादशाहके पास वह घण्टा होगा, वह विश्व-विजयी होगा। उसी घण्टेके बलपर देवप्रिय सम्राट् अशोकने संसार विजय किया था। उसीके कारण—जाने या अनजाने रोजगारी ब्रिटेन लोग आज संसारमें एक ही हैं।"

"ठीक बात है सरकार।"

"किताब में लिखा है कि उस घण्टेपर स्वस्तिक का फौलादी चिह्न है। घण्टेके पीछे पाली भाषामें युद्धमें विजय पानेकी पचासों बातें भी लिखी हैं। वह अष्ट-धातुओंके मेलसे बना और एक सौ एक मन वज़नी। ये बातें

कीलरको बतलायी गयी थी—फिर भी नालायक मामूली चीजें ख़रीद कर भेज रहा है।"

इसी वक्त कोनेकी मेजपर हवाई मेशीन खटखटाने लगी। बूढ़ा सैनिक निकट जा संवाद लेने और नोट करने लगा। यह सिलसिला कोई बीस मिनटोंतक जारी रहा।

"हुजूर!" हवाई संवादका नोट सुनाते हुए बूढ़ा विद्वान बोला—"इस बार मालूम पड़ता है, कीलर सही ठिकानेपर पहुँच गया है।"

"क्या?" परमोत्सुक कैसर उठ खड़े हुए—"क्या कीलरको अशोकके विश्वविजयी घण्टेका पता लगा—? कहाँ??"

"बम्बईके पास!"

"मैंने पहले ही कहा था...!"

"बोरीवली गाँवकी एक पहाड़ीके पास—कीलरने संवाद भेजा है—अंग्रेजोंको एक अद्भुत घण्टेका पता लगा है, जो स्वस्तिक-भूषित और एक सौ एक मनका अष्टधाती है।"

"वही है! वही है!!" उछलकर कैसर खड़े हो गये। कीलरको फौरन तार करो कि, उसी घण्टेकी जरूरत

है। आर्य अशोकके महान् घण्टेके बिना आर्य-वंशी जर्मन संसार-विजयी न हो सकेंगे।

"मगर—सरकार !" बूढ़ा बोला, "कीलरका कहना है कि घण्टेपर पुलिसका कड़ा पहरा है...। बड़े-बड़े अंग्रेज विद्वान् वैज्ञानिक, चीनी पैगोडाके पास इकट्ठे हो, घंटेकी जाँच कर रहे हैं; किसीको कुछ पता नहीं लग रहा है।"

"वे मूर्ख हैं। वह घण्टा बर्लिनमें आनेपर ही अपना भेद कहेगा। मैंने पाली पुस्तकमें पढ़ा है—बिना अद्भुत कारणोंके वह बजता ही नहीं—बजता है जब जिस देशमें, तब उस देशका सिक्का सारे जगत्पर चमकाता है।"

"आश्चर्य !" बूढ़ा वैज्ञानिक बोला—"प्राचीन आर्योंने जमीनो-आसमानके कुलाबे एक कर दिये।"

"बिला शक !" प्रसन्न कैसर बोले—"उस घण्टेमें मंत्र और विज्ञान दोनों कलाओंकी बाँकी बानगी है।"

"वाह ! वाह !!"

"उस घण्टेमें ऐसी एक जहरीली गैस बनानेकी तर्कीब भी लिखी है, जिससे दुश्मनकी बड़ीसे बड़ी पल्टनको एक क्षणमें सुला दिया जा सकता है।"

"मगर हेर कीलरका कहना यह है कि अंग्रेजोंके चंगुल-से घण्टेका निकालना गैरमुमकिन है।"

"दुनियामें पुरुषार्थियोंके लिये गैरमुमकिन कोई भी काम नहीं। कीलर अयोग्य हो, तो किसी औरको भेजनेका इन्तजाम हो; मगर फौरन उस घण्टेको यहाँ मँगाये बिना मुझे चैन नहीं।"

"फिर क्या हुक्म है?"

"कीलरको अभी तार दो, कि घण्टा—जैसे भी हो सके—चोरी या सीनाजोरीसे—फौरन जर्मनीमें आना ही चाहिये; नहीं तो कीलरकी जानकी खैर नहीं।"

"बेशक—जरूर गरीबपरवर! मैं अभी उसको जहाँ-पनाहका हुक्म, गुप्त तारसे सुना देता हूँ।"

उत्सुक कैसरने अपने सामने हेर कीलरको—घण्टा लानेकी सख्त हिदायत हवाई तारसे दिलायी।"

बुद्ध और ईसा

इतिहासका पण्डित अपनेको न मानते हुए भी हम यह माननेको तैयार नहीं कि हमारे नवम अवतार भगवान तथागत बुद्ध गौतम—ईसाइयोंके मसीहा हजरत ईसा अलस्सलामसे—महज पाँच सौ या हजार बरस पहले थे...

इतिहासके पण्डितोंका कहना है कि ईसा मसीहसे कोई पौने ६ सौ बरस पहले—हिन्दुस्तानके गौरव हिमालयकी तलेटीमें एक महाराज-कुमार पैदा हुआ था, क्षत्रिय—अर्थात् धर्मतः योद्धा—उसीने संसारको युद्ध-विरुद्ध विशुद्ध मन्त्र दिया था।

जहरसे जैसे विष उतरे, काँटा जैसे काँटेको खोज निकाले, उसी तरह आदमीयतकी छातीपर पागलपनने जो मतलबी युद्धोंके काँटे कील रखे हैं, उनको एक युद्ध-धर्मी

क्षत्रिय राजकुमार महापुरुष गौतम बुद्धने क्षण भरके लिये बाहर निकाल दिया था...

भगवान बुद्ध हमारे नवें भगवान हैं।

'हैं'—याने, भगवान् बुद्धदेवके बाद दूसरा तत्सम अवतार भारतवर्षमें नहीं हुआ...

अभीतक संसारमें बुद्ध तथागतकी ही तूती बोल रही है...

इतिहासोंके पण्डित और उनके जोड़-बाकी-गुणा-भागका फल भी शायद यही है, कि आज दिन भी संसारमें सबसे अधिक अनुगामी भगवान बुद्धके हैं।

सिलोन, तिब्बत, जापान, चीन और यत्र-तत्रके बिखरे हुए बौद्ध यदि एकत्र हो जायें, तो 'शर' या 'शास्त्र' किसी भी बलसे संसारको अपना बन्दा बना सकते हैं...वश्य!

देखो, चीनकी लम्बाई-चौड़ाई-मोटाई। देखो, जापानकी ढिठाई और ऊँची खोटाई!

'ऊँची खोटाई' महज तुकबन्दीके लिये नहीं लिखी गयी है—अहिंसावादी महात्मा बुद्धके मुरीद जापानी और चीनी दोनों हैं—मगर जैसे पानी चीनीको जबरन गलाकर आप मीठा बन जाता है, वैसे ही समधर्मी चीनियोंको चाट-चाट कर जापानी खिल और फूल फैल रहे हैं।

बुद्धने यह नहीं सिखाया था...

शायद जापानी भाषामें, 'भगवान बुद्ध' का अर्थ है 'बलवान युद्ध' !!

साहबने कही थोड़ी......बन्दोंने सौ जोड़ी !

न मानें आप, तो मनानेका मन हमारा न होगा—मगर, ऐसा कौन साहबे आला हो सका, जिसके बन्दे उसके विसातके बाद, सचमुच मजहबी ईमानमें मुसल्लम रहे हों?

क्या हिन्दुओंने चौबीस या दसमेंसे एक भी अवतारको एक स्वरसे दिलसे—माना? क्या यहूदियोंने मूसाकी बातोंको समझा...? क्या मसीहाके इलाजसे उनके मुरीदोंके मर्ज दूर हुए? नहीं, बार—बार नहीं।

हाँ—हजार बार हाँ-हाँ! कुछ अल्लाह-वली ऊपरकी बातोंको काटेंगे और डाटेंगे जोरसे वे ईमानके पूरे, जिनका यह दावा है, कि जो 'हमारे' शेरको 'शेर' न कहे, उसकी मिट्टी'को हम खाक कर देंगे।

'मिट्टी' को 'खाक' बनाकर, हजरते इन्सान, कीमियाँ-गरीका दावा दुनियाके माथेपर थोप देना चाहते हैं! सुबहान अल्लाह !!

इस खाकी-दावेको जो नामंजूर करे, उसकी हस्तीपर मस्ती भरी, इन्सानियत, बेहोश हो जाती है।

खाक और मिट्टीमें 'अभेद' ढूढ़नेवालोंपर 'भेदिये' खेद खाने और गाल बजाने लगते हैं। एक कहता है, मिट्टी खाककी माँ है; दीगर समझता है खाक मिट्टीकी दादी है।

खाक और मिट्टीके पुतले; मिट्टी और खाकके नामोंपर लड़ने लगते हैं।

कोई भी अवतार-पैगम्बर या 'रीडीमर'-पीछे मुड़कर अगर अपनी बोई हुई फसलपर नजर डाले, तो बिलासक उसकी नस्ली कमजोरी देखकर वह हैरान हो उठेगा।

अभागा इन्सान दोनों हाथ जोड़, दो-जानू हो, दोनों जहानके आकासे अर्ज करने लगता है कि—या मेरे मालिक! अच्छाईके नामपर बुराई, चिरागके नीचे अँधेरा, तू क्यों पैदा करता है?

शायद खुदी और खुदामें फर्क कायम रखनेके लिये...!

जिस तरह इतिहासके पण्डितोंकी बात हम नहीं मानते, वैसे ही ईश्वरके ठेकेदारोंकी बात दुनिया भी नहीं मानती। फलतः बुद्धका अर्थ होता है 'युद्ध'! मसीहाके मुरीद—वही 'मरीज' नजर आते हैं।

ईसाने मन्त्र दिया—पड़ोसियोंको प्यार करो! ईसाइयों ने मार-मार कर लाचार संसारको बेकार बेजार कर दिया...! खुदाकी खुशीके वास्ते?

'रोमनों' ने 'यहूदियों' को मारा, 'ब्रिटिशों' ने 'फ्रांसीसियों' को और 'प्रोटेस्टेण्टों' ने 'कैथोलिकों' को—क्यों ? क्यों ?

वही—साहबने कही थोड़ी, बन्दोंने सौ जोड़ी...!

मगर, भगवान बुद्धको माननेवाले एक बादशाहने हज-रत मसीहाके अवतारसे सैकड़ों बरस पहले—प्रेम, समानता और सदाचार-व्यवहारका सन्देश संसारके चारों ओर, दशों दिशाओंमें फैला दिया था।

उस शाहंशाहके जोड़का कोई और भी हुआ या नहीं ?

नहीं-नहीं ! वह बेजोड़ है इतिहासमें। युद्धको भुला-बुद्धकी यादमें संसारको प्रेम-रागिनी सुनानेवाला परम प्रतापी, परम वैष्णव, परम पूज्य, देवप्रिय सम्राट् अशोक प्रियदर्शी—अतुलनीय है।

कलिंग

अशोकके पितामह सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यने अपना सुखी साम्राज्य हिन्दूकुश पहाड़से कन्याकुमारी तक, मालवासे मगधतक और बंगालसे बंगलोरतक फैला रखा था...

यह चन्द्रगुप्त वही हैं जिन्हें कुछ लोग 'मौर्यवंशी' भी कहते हैं।

यह चन्द्रगुप्त वही हैं, जिनकी तीरन्दाजी और तलवारबाजीका कायल यूनानी महावीर अलक्जेण्डरतक हो गया था।

अलेक्जेण्डरके बाद उसके वायसराय सेल्यूकसको लोहेके चने चबवानेवाला और उसकी बेटी यूनानी युवतीको ब्याह कर अपने रंग-महलमें लानेवाला जो चन्द्रगुप्त हुआ है, वही मशहूर बादशाह अशोकका दादा था...

अशोकके पिता महाराज विन्दुसारने यद्यपि अपने जनक सम्राट् चन्द्रगुप्तका साम्राज्य-विस्तार-क्रम जारी रखा-फिर भी, उनके राजकालतक भारतका एक साधारण, परन्तु सुन्दर सूबा गुप्तोंके कब्जेमें नहीं आया था...

जिस सूबेको हम आजकल उड़ीसा नामसे पुकारते हैं, चन्द्रगुप्तके कालमें लोग उसे 'कलिंग' देश कहते थे।

चन्द्रगुप्त और बिन्दुसारके बाद अशोकने भी साम्राज्य-विस्तारका सिलसिला रोका नहीं। कल, बल और छल आदि पुरानी युद्ध-नीतियोंके अनुसार, आर्य अशोकने अपने राज्यको बहुत बढ़ा लिया!

फिर भी कलिंग देशपर मागधी सेनाकी विजयिनी पताका न फहरा सकी!

क्यों?...क्योंकि, कलिंग देशके निवासी परम देश-भक्त थे। मगध-पति अच्छे हैं या बुरे, यह सवाल कलिंग-वासियोंके माथेमें नहीं था—वे तो स्वतन्त्रताके प्रेमी थे।

ईश्वरके हाथों भी अपनी आजादी सौंपनेके लिये वहाँके लोग स्वप्नमें भी तैयार नहीं थे।

मगर, जो अपने बुजुर्गोंकी राहपर न चले, उसकी इज्जत हमारे देशमें नहीं हो सकती।

आजाद-खयाली भली बात है। मगर, साम्राज्य

उससे भी बड़ा है अशोकने एक दिन विचारा।

अनेक मन्त्रियों और सेनाध्यक्षोंको बुलाकर सम्राट्ने परामर्श किया कि कलिंग-विजय क्योंकर संभव और सरल हो जाय ?

"सरल तो है ही..." किसी वीर मन्त्रीने निवेदन किया—"जिस मागधी सेनाने उत्तरापथके पार बसनेवाले जङ्गलियोंको—हूणों और अरबोंको हरा दिया, उसके सामने कलिंगीय सेना क्या टिकेगी ? बस, चढ़ाई होनी चाहिये...।"

दरबारी महा ज्योतिषीसे सम्राट्ने पूछा—महाराज ! आपका शास्त्र क्या कहता है ? कलिङ्ग-युद्धमें विजय मिलेगी ?"

ज्योतिषी होठोंमें फुसफुसाकर क्षण भरतक उंगलीकी पोरोंपर कुछ गणना करता रहा, फिर नमन कर उसने जवाब दिया—"नहीं-! कलिंग देशमें मागधी सेना ऐसी हार खायेगी कि फिर, युद्धसे उसको घृणा हो जायेगी..."

"कभी नहीं !!" सम्राट् अशोकके अशोक वीरोंने तलवारोंको छूते हुए गर्जना की—"कदापि नहीं। बिना आर्य-महासाम्राज्यको स्थापित किये हमारी तलवारें अशान्त ही रहेंगी...।"

मन्त्रीने अशोकको समझाया कि योद्धाओंको शस्त्रोंकी जितनी जरूरत होती है, उतनी शास्त्रोंकी नहीं। ज्योतिषी यदि हमारी विजयमें सन्देह करता है तो हम भी उसकी सच्चाईमें अविश्वास करेंगे...।"

मगर, न्यायी अशोकने एक बार फिर ज्योतिषीसे ही प्रश्न किया—"तन्त्र, मन्त्र या यन्त्रसे भी—क्या हमें कलिंग-पर विजय न मिलेगी ? मुझे मेरे पिताकी आज्ञा है, कि मैं उस देशपर मागधी पताका जरूर फहराऊँ...।"

"तन्त्र-मन्त्र तो अनेक हैं धर्मावतार !" ज्योतिषीने निवेदन किया—"मगर, हमारे धर्ममें बराबरीकी लड़ाईकी बड़ाई है।"

"शत्रुको जैसे चाहे वैसे नुकसान पहुँचाना चाहिये !" किसीने राय दी।

"शत्रु है वह, जो अपना अनिष्ट चेते। बेचारे कलिङ्गीय लोग स्वतन्त्रता-प्रेमी और स्वदेश-भक्त हैं—उनपर चढ़ाई करनेवाला ही शत्रु माना जायगा—लोभी—आततायी !" ज्योतिषीने दृढ़तासे जवाब दिया।

"मगर, पूर्वजोंकी यह प्रतिज्ञा है कि हम अखिल संसार-में अपना राज्य फैलायेंगे। गान्धार, कपिशा और तिब्बततक मगध महादेवकी पूजा होती है। ऐसी हालतमें पड़ोसी

कलिंग स्वतन्त्र न रहने पायेगा। पण्डितराज ! क्या कोई तन्त्र-मन्त्र ?"

"अनेक-धर्मावतार !" ज्योतिषी बोला—"आप एक सौ एक मनका एक अष्टधाती घण्टा तैयार कराइये। उसको मन्त्र-पूत मैं कर दूँगा !"

"···और फिर कलिंगपर हमारा अधिकार हो जायगा ?"

"निस्सन्देह !" गंभीर, दुर्बल परन्तु तेजस्वी ब्राह्मण ज्योतिषी बोला—"कलिंग ही नहीं—संसारका कोई भी बली देश, तबतक आपका सामना न कर सकेगा, जबतक वह घण्टा आपके पास रहेगा··· । परन्तु...!"

"परन्तु क्या ब्राह्मण ?"

"बहुत पवित्रतासे संभालकर घण्टेको रखना होगा। नापाकीज़गीसे घण्टेका मन्त्र उल्टी मार मारेगा···।"

"बहुत ठीक !" अशोकने प्रसन्न होकर कहा—"विश्व-विजयी घण्टेकी पवित्रताकी रक्षा स्वयं अशोक करेगा—खजानेसे जरूरी धन लेकर आप उसको फौरन तैयार कराइये...।"

"तथास्तु आर्य !" ब्राह्मण ज्योतिषीने घण्टा बनानेका भार ले लिया।

अशोक शोकमें

और कलिंग देशवासियोंने यह सन्देश धीरजसे सुना कि महती मागधी सेनाके साथ युवक सम्राट् अशोकने उन-पर चढ़ाई कर दी है।

क्यों चढ़ाई की—? शान्त देशपर, बेकुसूर आदमियोंपर सम्राट् अशोकने आग और गर्म लोहा बरसानेका विचार क्यों किया...?

साम्राज्यवादके लिये। आदमी कुछ ऐसा लोभी या पागल प्राणी है कि शान्ति या सन्तोष तो उसके पास भी नहीं फटकने पाते।

हरएक नर, नरेश होना चाहता है और एक-एक नगण्य नरेश भी अपनेको परमेश्वर मानना—दूसरोंसे मनवाना चाहता है।

मनुष्य जीवनमें ही कुछ नशा है। नशेमें ही झूठ या

सच है। झूठ या सचमें ही संसारी माया-मोहके रंग-बिरंगे झगड़े हैं !

इस मनुष्यता यानी नशा, झूठ, सच, माया और रङ्गसे कोई अछूता बच नहीं सकता ।

संसार मिथ्या—झूठी दुनियाके एक हिस्से कलिंगको सच मान महान् सम्राट् अशोकने उसपर चढ़ाई बोल दी... ।

उसी मिथ्याको सङ्कटमें देख कलिंगवासियोंने सत्यकी तरह उसको कलेजेसे चिपका लिया, बन्दरीके मरे बच्चेकी तरह...!

वे परम बलवान् सम्राट्की कालवाहिनीसे लोहा लेने और मातृभूमिकी मर्यादा प्राण देकर भी बचानेके लिये बद्धपरिकर हो गये ।

कलिंग-देशके कोने-कोनेसे युद्ध-युद्धकी पुकार आने लगी। देशके बूढ़े, जवान, बच्चे और महिलाएँ युद्ध-निमन्त्रणमें भाग लेनेको तैयार हो गयीं ।

जो जरा इतस्ततः कर रहे थे या प्राणोंका मोह जिन्हें पीछे खींच रहा था—उनको कलिंग देशके दार्शनिकों-कवियोंने वीर मन्त्रों और छन्दोंके तेजसे रणरङ्गी छैला बना दिया—!

दानिशमन्दोंने नासमझोंको समझाया—"यह शरीर क्षणभंगुर है..."

"डरमें शैतान और निडरतामें भगवान् रहते हैं। और शैतान—माया तथा भगवान्—प्रकाश हैं। बिना प्रकाशके जैसे छाया छिप जाती है, वैसे ही भगवानकी इच्छासे शैतान बेजान किया जा सकता है।"

"ले! हथियार उठा ले! कलिंगी जवान! तेरे देशपर विदेशी राज करनेको आ रहा है। विदेशी हैं अशोक वैसे ही जैसे हूण; क्योंकि जो भले आदमीकी आजादी छीनना चाहे वह स्वदेशी आर्य हो नहीं सकता।"

"कलिंगीय जवानो! धनुषपर बाण तानो! और बेई-मानों, मागधी नादानोंको बतला दो, कि तुम गाजर-मूली और साग-पात नहीं हो—जिसे कोई भी पशु खा-पचा सके।"

"वीरो! जो तुमको गुलाम रखना चाहे, उसके पितरों और देवोंको बिना मारे न छोड़ना! गुलामी नरक है, आजादी स्वर्ग। गुलामी महानीच मौत है, और आजादी है—स्वर्गीय अमरता।"

"वीरो! बोलो, जननी जन्मभूमिकी जय! और दुश्मनों-को रक्तसे नहलाकर बतला दो कि तुमने ऐसी माँकी

छातीसे, ऐसा तेजस्वी दूध पिया है जिससे तुम्हारी हड्डियाँ और नसें फौलादी बन गयी हैं।"

अब क्या था? सारा कलिंग देश एक हो गया। चारों कोनोंपर मागधी सेनासे लड़ाई छिड़ गयी...

उन दिनों भारतवर्ष? उसका एक-एक प्रदेश स्वतन्त्रताकी कीमत जानता था। युद्धमें मरनेवाले 'वीर' तो आज भी माने जाते हैं, लेकिन वीर-गतिकी इज्जत इस देशमें अब उतनी नहीं, जितनी उस जमानेमें थी—जिसका गुणगान आज भी होता है। जो हो...

अशोकके मागधी वीर कलिंगियोंपर टिड्डियोंकी तरह टूट पड़े। मगर फौलादी दीवारकी तरह कलिंगी वीर दृढ़तासे डटे रहे।

अशोकने आग बरसायी, लौह-बाणोंकी बीहड़ बरसात भी कलिंगियोंके माथेपर मगधियोंने लगायी—मगर, कलिङ्गी अचल थे—हिमालय!

कई लाख कलिङ्गीय देश-भक्त अपने इष्ट देवों और मातृभूमिके नामपर सदाके लिये संसारसे बिदा हो अमर समर-सेजपर सो गये!

कई हजार आततायी मागधी वीर भी वीर-गतिको पा गये!

फिर भी युद्धका ऊँट किस करवट बैठेगा, यह सम्राट अशोककी समझमें न आ सका।

कई महीनों तक घनघोर, धुआँधार युद्ध होनेपर भी कलिंग देशपर मागधी सेना अपना झण्डा न फहरा सकी।

"इस युद्धमें विजय पानेकी सख्त जरूरत है।" सम्राट्ने मन्त्रिमण्डलके सामने सलाहकी बात की।

"सख्त मुश्किल है—धर्मावतार!" एक मन्त्री बोला—"पचास हजार कलिंगी सिपाहियोंके खेत रहनेपर भी उनके पाँव उखड़ते नहीं हैं।"

"इस देशके लोग वीर हैं, मन्त्रीजी!" अशोकने सत्यकी रक्षा की—"ऐसोंसे लड़नेमें भी मजा आता है।"

"बेशक महाप्रभो!" युद्ध मन्त्री मस्तीसे मुस्कराता हुआ बोला—"वीरोंसे ही लड़नेमें अबीरी रंग जमता है। तलवारोंके कुमकुमे, खूनकी पिचकारी, मुण्डोंका भैरव-गान और रुण्डोंका ताण्डव ताल—अहा हा!..."

"कलिंगियोंसे लड़कर मेरी भुजाएँ सन्तुष्ट हो गयीं।"

"मगर यह—यह तो शत्रुके गुणकी प्रशंसा हुई—अब अपने दुर्गुणकी निन्दा भी होनी चाहिए। इतने दिनोंसे गुप्त महा-साम्राज्यकी सेनाएँ एक क्षुद्र देशको न हरा सकीं—यह डूब मरनेकी बात है!" सम्राट् बोले...

"अब हम ज्यादा डटकर—सिमिट कर लड़ेंगे।"

"सिमिट कर या फैलकर—डटकर या हटकर—जैसे भी हो, इन कलिंगियोंको हराना होगा।"

"नहीं तो, संसार हमारी इज्जतपर थूकेगा—हुँ हुँ! सम्राट् अशोककी मागधी महासेना एक मामूली मुल्कके मुट्ठी भर मनुष्योंसे हार खा गयी...

"ऐसी हारसे मौत हजार बार बेहतर है, आर्य वीरो!"

"जय महासम्राट्की!" सारे वीर दहाड़ उठे!!

दूसरे दिन मागधी सेना विद्युत्तेजसे कलिंगियोंपर चमकी...तड़पी!

लोहेसे लोहे बजे और लहूकी लहरें मैदानेजङ्गमें छह-रने-लहरने लगीं!

"कलिंगीय महावीर लड़े और लड़े! दादा गिरा तो बाप लड़ा और बापके बाद सुकुमार बेटोंने मागधी-फौजियोंके हाथोंसे लोहेके चने चबाये......!

कलिंगदेशकी वारांगनाएँ भी रणाङ्गणमें रोष-रक्त आँखें तानें—अशोक साम्राज्यवादीकी बर्बादीके लिये—हजार-हजारकी कतारोंमें जूझने—मरने लगीं।

मगर, अफसोसकी बात है कि कलिंगदेशको वीरताका पुरस्कार—पराजयके रूपमें मिला। वह भी तब—जब

वह देश लड़ते-लड़ते निर्धन—निर्जन-सा हो गया था।

तभी तो! श्मशानवत् कलिंगमें प्रेतोंकी तरह प्रवेश करते हुए पाटलिपुत्र-पति सम्राट् अशोकके मनमें—न जाने कैसी विचित्र चुटकी लेनेवाला कोई शोक समा गया...! अशोक—शोक !!

पहले तो कलिंग-विजयी सम्राट् अशोकने मैदानों और खेतोंमें मुर्दोंके ढेरके ढेर देखे।

किसान जैसे खलिहानमें भुस धानकी अटान उठा दे; वैसे ही, काल-किसानने भी रणखेतमें पुरुषार्थकी फसलको काटकर जमा कर दिया था...!

जैसे शराबी नशा मिलनेमें देर देख, क्रुद्ध हो बक-झक करने लगता है; मगर, नशेमें आते ही वह उसी व्यक्तिके पाँव चाटने लगता है, फिर चाहे वह घरका नौकर ही क्यों न हो, वैसे ही कलिंगको जीतनेतक तो सम्राट् अशोक सर्वनाशके प्रलयङ्कर रुद्र बने रहे; मगर, प्रलयोपरान्त रुद्रताकी महिमा कितनी मँहगी पड़ती है, यह आँखों देख-कर आर्य अशोकका उदार हृदय पिघल उठा—दहल उठा !

उन्होंने यह कोई नया युद्ध नहीं रोपा था! मागधी महा साम्राज्यका गरुड़ध्वज हाथमें—प्राणोंकी तरह—लेकर अशोकने एकाधिक बार, हाहाकारपूर्ण रणक्षेत्रमें, वीर-विहार

किया था। अनेक बार अपने अचूक शस्त्र-प्रहारोंसे उन्होंने शत्रुके मस्त मस्तक भी धड़से अलग किये थे। मगर, कलिङ्गवासियोंकी वीरताकी छाप अशोकके दिलपर वज्र-दृढ़तासे छप गयी।

विजयी अशोकने देखा—जो कलिंग स्वर्गकी तरह हरा-भरा और सुन्दर था, वही अब उजाड़ और मसानका प्रतिद्वन्दी बन रहा है।

विजयी अशोकने देखा—कलिङ्गदेशके पंगु प्राणियोंको छोड़कर बाकी सभी वीर-गति लाभ कर चुके थे, बूढ़े मैदानमें मरे पड़े थे। जवानोंपर—जवान, तहसे किये हुए समर-सेजपर सजे थे। यहाँतक कि "रेखिया उठान" नादान सुकुमार बालक भी हाथोंमें लोहा लिये लोहूकी सेजपर सोये पड़े थे!

विजयी अशोकको विजित कलिङ्गमें क्या मिला? धन-धान्य? नहीं। सुन्दरियोंका झुण्ड वीर अशोकके हाथों लगा होगा? नहीं-नहीं! तो कलिंगी कैदी कई लाख हुए होंगे? अजी नहीं—वीर लोग बन्दी होनेके पूर्व ही बन्धनमें डालने वालोंको साथ लिये, मुक्त हो जाते हैं। विजयी अशोकको कलिंग-विजयसे, अपयशके सिवा और कुछ भी न मिला।

विजयी अशोकको कलिंगदेशमें अगर कुछ मिला—

हाँ,—तो मुर्दोंका ढेर ! निर्मम अन्धेर !! प्राणियोंमें बूढ़ी माताएँ, विकल विधवाएँ, अबलाएँ और हजारों लँगड़े-लूले, अन्धे-कोढ़ी !

विजयी अशोकका कलेजा काँप उठा ! उनकी एक झकके लिये भगवानकी दुनियाका एक भाग साफ हो गया—झक !

विजयी अशोकको समाचार मिला, कि युद्धके बाद भी—कालका पेट अभी भरपूर नहीं हुआ है। अनेक रोग फैलकर बचे-बचाये बेचारोंको चारों ओरसे चोरोंकी तरह घेर-घेर कर मार रहे हैं।

"विजयी अशोक !" अशोक "आदमी" सोचने लगा—"यह विजय है या कसाई-काण्ड ?......"

विजय असल वह, जिससे पराया बदन भी चमकता नजर आये।

विजयी हैं वे, जो समर-क्षेत्रमें मुस्कराते हुए लापर्वाह सो रहे हैं।

विजयी हैं वे—जिन्होंने जान दे दी, मगर आन-बानपर तान न आने दिया।

अशोक—! अरे हत्यारे ? तू विजयी नहीं पागल है...! ईश्वर-द्रोही है—हृदयहीन है !

हृदय उन्हें था, जो अपने देशके लिये चौरोजे चोलेकी चिन्दी-चिन्दी उड़वाकर, मराल-चालसे नाकें ऊँची किये नाकों तक उड़ गये...!

वे देशभक्त शहीद, संन्यासियोंसे बढ़े-चढ़े थे। उनको न तो धनका मोह था और न जन-तनका। वे मुक्त थे, संसारमें वे ही धन्य हैं जो मुक्त हैं।

और वे आततायी, पापी और नाशमान हैं, जो औरोंकी गुलामीसे अपना पेट पालते हैं।

"अशोक ! अशोक !!" सम्राट्का माथा विविध विचारोंसे टकराता रहा—"तू इस युद्धमें हार गया ! जहाँ विजयोत्सव देखनेके लिये अभिमानी शत्रु जीवित न हो, वहाँ विजय नहीं, पराजय नाचती है।"

"महाप्रभो !" न्याय-मन्त्रीने निवेदन किया—"आप बहुत उत्तेजित न हों—इस विजयसे !"

"बेशक—निस्सन्देह !" अशोक बोले—"यह विजय है। आज अशोकने समझ लिया कि मृत्युसे प्रेम बड़ा है।"

"महादेव ! आप महान हैं।" ज्योतिषीने कहा। "महान यहाँ कुछ भी नहीं है" भरे कण्ठसे सम्राट् अशोकने कहा—"महान है यहाँ दुःख, महान है यहाँ अन्धकार—महान है यहाँ मायाडम्बर !"

"यही बात दीनबन्धु !" मन्त्री बोला—"तथागतने भी कही है।"

"महान है यहाँ वह, जो, महानतासे बचे—महानताको भी रोग ही समझो—फीलपांव, कण्ठमालादि। इस युद्धसे मैंने शान्तिका रहस्य समझा है। मन्त्रीजी !'

"आज्ञा, देव !'

"आजसे अशोक परोपकार-व्रती 'भिक्षु' बनकर प्रेमसे विश्वविजयकी साधना करेगा।"

"इस अष्टधाती घण्टेसे धर्मावतार !" ज्योतिषी बोला—"आप स्वर्गपर भी कब्जा कर सकते हैं।"

"दूर करो इस घण्टेको ! इसपर पाली भाषामें, युद्धसे बचनेका आदेश लिखकर, कहीं दूर देशमें, समुद्रके किनारे या पहाड़के पास इसको गुप्त ढङ्गसे रखवा दो।"

"मगर, धर्मावतार !" ज्योतिषी बोला—"घण्टेसे मंत्र बल अब अलग हो नहीं सकता, जब कभी और जो कोई इसकी मदद युद्धमें लेगा—जरूर विजयी होगा—"बशर्तें कि, किसी पापसे यह अपवित्र न हो जाय।"

"इसीलिये इसको तुम दूर देशमें, जङ्गली लोगोंमें रख आओ। वहाँ, जहाँ इसके जानकार जा भी न सकें।"

"ऐसा ही होगा धर्मावतार !" नम्र ज्योतिषी बोला।

"और !" अशोक सतेज बोले—"मन्त्रीजी ! आजसे साम्राज्यकी सारी सेनाएँ भङ्ग कर दी जायँ। युद्ध-कर्म और शिकार-धर्म बन्द कर दिया जाय। आजसे अज्ञानी अशोक ज्ञानोज्ज्वल प्रेमसे संसारको प्रकाशित करेगा।

"युद्ध शैतानी है और प्रेम आसमानी !"

"हे तथागत ! हे मायेय ! हे गौतम ! दयाकर मुझको भी शुद्ध बुद्ध बनाओ देव !"

भावोंसे भरे मगधाधिपति, महा सम्राट् अशोकने अपने और 'अपनों' में अनेक अभावोंको चमकते हुए देखा···! वह सिहर उठे !!

बेचारा सम्पादक

बोरीवलीकी पहाड़ीकी तलेटीके पैगोडामें जो घंटा चीनी-भिक्षुकी निगरानीमें था, आर्य अशोकने उसीके बलसे कलिंगियोंको हराया था।

उस घंटेको नापाक करनेके लिये जिस अंगरेजने संन्यासी वेशधारी जासूसको पैगोडापर तैनात किया था, वह स्वयं ब्रिटिश-राजका बड़ा जासूस था।

उसको गवर्नमेण्टका हुक्म था, कि वह चीनी भिक्षुके रहन-सहनपर सावधानीसे नजर रखे—भिक्षुके पास कोई गुप्त खजाना तो नहीं है? ऐसा भी अंगरेजोंका ख्याल था। चीनी-भिक्षु किसी देशका गुप्तचर तो नहीं है? कौन जाने? इसलिये सरकारने एक पूरे जानकार जासूस-को पैगोडाकी तरफ ललकार दिया। अंग्रेज जासूस

"पूर्वी भाषाओंका पण्डित" था—वैसे ही, जैसे अँग्रेज स्वाधीनताके पुजारी हैं। अपूरे,—"मेरी चुपड़ी देखरे रूखे !"

जब-जब चीनी भिक्षु नहाने धोने जाता, चोरोंकी तरह दबकता वह जासूस तभी घंटेके पास पहुँच जाता।

मगर "पूर्वी भाषाओंके प्रोफेसर" साहब अशोक-कालीन अक्षरोंको न समझ सके। ऊपरके अफसरोंने घंटेकी तस्वीरें, तरह-तरहकी मांगीं—जिससे कोई अच्छा विद्वान जाँच कर सके कि, उन अक्षरोंमें मन्त्र क्या है ?

मगर, भिक्षु सुअङ्ग सांग इतना चिढ़ता था फोटोके नामसे कि जासूसकी हिम्मत भी हैरान हो गयी।

इसीलिये संन्यासीके वेशमें कोई गोयनी गरीब, चौबीस घंटे, घंटेके पास रखा गया...

इसी बीचमें भिक्षु सुअंग सांगने प्रसंगतः अंग्रेज जासूससे घंटेके चमत्कारकी चर्चा कर दी। कह दिया—अपवित्र होनेसे वह अनर्थोत्सव उपस्थित कर सकता है।

भिक्षुकी बातको 'नानसेन्स !' कहकर उड़ा देनेके बाद भी, दिलके दिलमें, साहब बहादुर उस घंटेमें कोई 'सेन्स' (तत्व) ढूँढने...!

घंटेको नापाक करानेमें साहब डरता था क्योंकि,

"पूर्वी भाषाओंका प्रोफेसर" चाहे वह न रहा हो, मगर, पूर्वी चमत्कारोंके किस्सोंसे वाकिफ जरूर था।

अतः एक बलिपशु—! वह गोयन्नी संन्यासी जासूस...। जिसने अपने पापी पेटके भरने मात्रके लिये उस घंटेको, ग्वालिनके साथ, नापाक कर दिया !

छिपे जासूसके दब मरनेके बाद बोरीवली गाँवके लोगोंने घंटेकी पूजा करनी शुरू कर दी। भिक्षुके भयभीत भाग जानेसे पैगोडाके बुद्ध भगवान तो बिना सेवा-सफाईके रहने लगे और बाहर घंटेकी पूजा बढ़ती चली।

बम्बईमें भी यह अद्भुत संवाद, बिजलीकी तरह, फैल गया और दो चार दिनोंमेंही हिन्दुओंकी महिलाएँ पहले, और फिर महाशय लोग भी—घण्टा—पूजन या दर्शनको सोत्साह, बोरीवली जाने लगे।

मगर, स्टेशनपर जिसने भी यह सुना कि, घंटेपर संगीन पहरा है—अँग्रेज सारजण्ट और एक दर्जन कानिष्टेबल जमादार डटे हैं, वह उल्टे पाँव लौट आया।

"घंटेके नीचे माल है जरूर !" पुलिसके डरसे घर लौट आनेवाले एक मराठेने सोचा।

"अजी जनाब ! घंटा जहरीला है—इसीलिये पहरा है उसपर...।" दूसरे मुसलमानने अटकल बाँधा।

"न तो घंटेके नीचे माल है और न वह विषैला ही है। घंटा ठोस सोनेका बना है। बड़े-बड़े साहबोंने बड़ी-बड़ी खुर्दबीनें लगाकर, कल घंटेकी घंटोंतक जाँच की थी।"

"सुना है, यह घंटा लण्डनके अजायब-घरमें लटकाया जायगा।"

"हमारे घरमें हमारे ही बुजुर्गोंका बनाया घटा भी नहीं रहने देंगे हाकिम लोग।" एक पत्रकारने चश्मा पोंछते हुए जुबानी कतरनी खचखचा दी।

"हाकिमकी शिकायत कानूनन गुनाह माना जाता है। यू अण्डर स्टैण्ड—सर ?" एक पारसीने जर्नलिस्टपर थाप दी।

"अजी बोलनेमें और सच बोलनेमें डर नहीं—यह तो, जुबानी जमाखर्च है। हाँ,'पेपर' में लेख लिखकर बोलना—म्याऊँका मुँह पकड़ना है। महज बोलनेवालोंको हमारी हवाई सरकार भी शरद्ऋतुके बादल समझती है।" पत्रकार बोला।

"अच्छा—घंटा लण्डन भेजा जाय या नहीं इस सब्जेक्टपर आपके पत्रकी क्या पालिसी है?" पारसीने पूछा।

"मेरा पत्र...?" चश्मेकी कमानीकी क़लई खोलते हुए सम्पादकजी बोले—

"मेरा पत्र घंटेके पक्षमें रहेगा।"

"याने...?" पारसीने पूछा—"अंग्रेज़ अगर इस घंटेको इज्ज़तसे रखें, तो इसका देश-निकाला आप पसन्द कर लेंगे ?"

"क़दापि नहीं...।" दुबला पत्रकार दाँत पीसकर बोला—"यह धर्मकी बात है। मेरा मतलब हिन्दू-धर्मसे है, जिसमें घंटा पहले और देवता बादमें पूजे जाते हैं। यह बात साबित हो गयी है कि घंटा हिन्दू है, हिन्दू कला है, हिन्दू संस्कृति है। ब्रिटिश सरकार हिन्दुओंसे अगर यह घंटा ले लेगी तो, हिन्दू-धर्मका सफाया ही समझो !"

पत्रकार उत्तेजित हो उठा—नथुने फुलाकर, स्वरका तार गान्धारसे धैवततक चढ़ाकर, हथेलीपर मूठ मार-कर वह बोला—"इस घंटेपर मेरा अखबार निःसार हो जाय तो पर्वाह नहीं, मगर घंटा रहेगा इसी देशमें और अमर स्वर भरता रहेगा !"

घण्टा ग़ायब

बोरीवली स्टेशनके अहातेके बाहर जो दो आदमी निकले—उनमें एक—नाटा मगर गुट्ठल गोयनी ईसाई था और दूसरा लम्बा तगड़ा पठान। बड़ी जुल्फें—हाथमें मढ़ा हुआ मोटा सोटा।

दोनों जब कस्बेकी सड़कसे बाहरकी तरफ बढ़े तब देखनेवालोंने समझा, किसी जङ्गली ठेकेदारका मुनीम और रखवाला जङ्गलकी ड्यूटीपर जा रहे हैं।

मगर कस्बेसे ज़रा दूर जाते ही गोयनी और पठानमें जो बातें हुईं, उन्हें अगर वह अंग्रेज जासूस सुनता, तो खुश हो जाता।

"तीन हजार रुपये नक्द!" गोयनीने पठानको सुनाया-काम जान जोखोंका है।

"जब तू मेरे जासूसका भाई है, तब तेरे लिये ज़रा भी मुश्किल नहीं। पहरेदारों और सारजण्टके दिल ज़रूर होगा।"

"दिल है—मेरे रोने-गिड़गिड़ानेसे रातभर मुझे वहाँ वे र ने भी देंगे; "लेकिन, आप मुझे देंगे क्या ?"

गोयनीके हाथपर पठानने एक, हाकी बाल बराबर, गेंद दिया—"इसको, यह पुर्ज़ा हटाकर, जिस आदमीके आगे खेलोगे वह, फ़ौरन बेहोश हो जायगा। तुम्हें मुँह माँगा इनाम दूँगा—मगर घण्टेको उठाकर मोटर-लारी तक पहुँचाना होगा।"

अजी स-सवा-सौ मनका फ़ौलादी बोझ मैं तो नहीं..."

"आदमी और भी रहेंगे...?"

"मगर आप मुझे देंगे क्या...?"

दो हज़ार रुपयेकी गिन्नियाँ, एक थैलीमें पठानने गोयनीको दीं—"इतनी ही और। बशर्ते कि, बिना शोरो-गुलके, आज ही बारह बजे रातको वह घण्टा मेरी लारीपर पहुँच जाय।"

"बिला शक !" गोयनी आगे बढ़ा।

लेकिन पठान तबतक वहीं खड़ा रहा, जबतक गोयनी

जङ्गली मैदानमें ग़ायब न हो गया। फिर, वह बोरीवली स्टेशनकी तरफ़ लौटा। मगर थोड़ी ही दूर जानेपर एक जर्मन लारी सामने आकर रुकी।

लारीवालेने पठानसे पूछा—"कौन है?"

"आर्य?" पठानने जवाब दिया।

"अन्दर आओ!"

और पठान लारीसे बम्बईकी तरफ लौटा।

गोयनी गिन्नियाँ लेकर पहले अपने घर गया, जो बोरीवलीके पासके एक गाँवमें था। गिन्नियों को ठिकाने पर रख उसने बड़ी प्रसन्नतासे, भरपूर मदिरा पी।

"क्यों इतनी पी रहे हो?" उसकी नाटी, नमकीन औरतने नाक सिकोड़कर पूछा।

"आज पी रहा हूँ नाटक खेलनेके लिये!"

"भाड़में जाय नाटक!" गोयनी नारी भभकी—"कहीं नौकरी तो ढूँढ़ते नहीं और कमर हिलाकर औरतोंकी तरह पैसे कमानेको सौ जानसे हाज़िर!"

"मेरी जान!" गोयनी नशेमें मुस्कराया—"मानों अहसान मेरा, कि मैं उसका बड़ा भाई हूँ, जो जासूसी नौकरीमें घंटेसे दबकर मर गया।"

"मर गया मेरी जूतियोंकी बलासे!" औरत बिगड़ी—

"जासूसीकी कमाई करनेवाला—धोकेबाजीकी रोटी खाता है। वह भाई बनकर ही ठगता है। ऐसोंसे मैं नफरत करती हूँ।"

"मैं भी वैसा ही जासूस आजसे बन गया मेरी जान! मुझे तो न छेड़ो—आह! छेड़ोगी?"

"तुम जासूस बन गये, ऐसा एतबार हो जानेपर मैं तो तुम्हें शैतान-पूजक समझने लगूँगी......"

"और तलाक़—याने डायवोर्स!" गोयनीने चालाकीसे पूछा.........।

"आफकोर्स!" मुँहको एक अजीब दिलफरेब अदासे मटकाकर मानिनी गोयनी मस्तीसे बोली—"अभी ऐसा न समझना कि मैं बिना मर्दकी रह जाऊँगी, यह—यह क्या......?"

मर्दके हाथमें गिन्नियोंकी थैली देख औरत झपटी—जैसे छीछड़ेपर चील।

"ना—! छीनो नहीं।" गोयनीने लिपटती नारीको बरजा—"इस थैलीमें जासूसी कमाईकी गिन्नियाँ हैं।"

"गिन्नियाँ—!" गोयनी बीबी, माता मरियमकी याद कर, माथे और हृदयपर 'क्रास' बनाने—कुछ प्रसन्न मन्त्र जपने लगी, पर—"ये तो बहुत हैं! अब हम भी अमीर हो जायँगे!!"

"मगर बीबी !" गोयनीकी बड़ी-बड़ी नशीली आँखें आकर्षक अदासे घूमीं-चमकीं-"जासूसी आमदनी शैतानी होती है न ?"

"जासूस ही अगर किसी औरतका मर्द हो गया हो, तो निबाहना ही बेहतर है।" सुन्दरीका स्वर सोनेसे ढीला पड़ गया।

"मर्दोंका निर्बाह औरतोंके ही हाथमें है। सरकार निभायेंगी तो बन्देकी जरूर निभ जायेगी।" लड़खड़ाते गोयनीने अपनी स्त्रीको नशेमें लिपटा लिया और उसने अपने मुँहका सारा दुर्गन्ध सुन्दरीके सरस होठोंमें भर दिया।

क्षण भर बाद वही गोयनी—फिर, बाहर निकला और झूमता हुआ बोरीवलीकी तरफ चला।

और वह वहाँ पहुँचा, जहांपर चीनी पैगोडाके चारों ओर घण्टेपर पहरा पड़ रहा था।

"कौन है ?" एक पहरेदारने पूछा।

"फरडिनेण्ड पीटर !" गोयनी गिड़गिड़ाकर बोला—"जो आदमी घण्टेके नीचे दब मरा, मैं उसका बड़ा भाई हूँ।"

"इस अन्धेरी रातमें क्या तू भी मरनेको यहाँ आया है ?"

"नहीं भाई ! तुम्हारे साथ रहकर आज मैं वहीं सो जाउँगा; जहाँपर मेरा भाई मरा था। बिना मेरे ऐसा किये पाल फरडिनेण्डको जन्नत नसीब न हो सकेगी।"

जन्नत या स्वर्गके नामपर अपील करनेसे पूर्व देशोंके लोगोंपर जैसा अनुभूत प्रभाव पड़ता है, वैसाही, घंटेके हिन्दुस्तानी रक्षकोंपर भी पड़ा। उन्होंने फरडिनेण्ड पीटरको, उस रात घंटेके पास सोनेकी आज्ञा दे दी !

और मौका पाते ही गोयनीने सिपाहियोंके बीचमें उस गोलेको दे मारा ?

चालाक़ जर्मन

बात यों हुई, ज्योंही पठानके दिये गोलेने अपना रंग जमाया और घण्टेके रखवाले सिपाही और साहब बेहोश हो गये, त्योंही पैगोडाके पीछेसे साहबी पोशाकमें कई आदमी घटनास्थलपर नजर आये। उन्हें देखते ही गोयनी भी उनसे जा मिला।

बिजलीकी तरह सारे आदमी घंटेपर टूटे और हाथों हाथ उठाकर उसको पैगोडासे दूर सड़कपर ले आये। वहाँ दो बड़ी मोटर-लारियाँ इन्तजारमें खड़ी थीं। घंटा एकपर सावधानीसे रखा गया और सब लोग दोनों मोटरोंमें सैनिक कायदेसे बैठ गये। चलनेके पहले लारियों-के पेट में पेट्रोल पड़पड़ाने लगा।

"साहब !" अभी तक चुपचाप नीचे खड़ा गोयनी जरा जोरसे पुकारकर बोला—"मेरा बाकी इनाम ?"

"लारी चलाओ !" मानो उस पठानने भीतरसे आवाज दी और तुरन्त गाड़ियाँ रेंगने-दौड़ने लगीं ।

"ओ साहब ! मेरा इनाम देते जाओ; नहीं तो मैं सारा भण्डा फोड़ दूँगा ।" चिल्लाता हुआ गोयनी लारियोंके पीछे दौड़ने लगा ।

तड़—तड़ड़ड़ड़ड़ धड़ाम !

एक लारीकी खिड़कीसे आगका एक गोला उठता नजर आया—और क्षण भर बाद जासूस गोयनीका महा-जासूस भाई जमीनपर गिरता और चिल्लाता नजर आया ।

"आह ! मार डाला मुझे बेईमानोंने—आह ! आह !" मगर, लारीके सवारोंके कानोंतक गोयनीकी चीख—पुकार न पहुँच सकी । दोनों लारियाँ बम्बईकी तरफ भाग खड़ी हुईं ।

उसी सड़कपर, करीबन वहीं, जहाँपर गोयनीको पठानने गिन्नियाँ दी थीं—वह गोली खाकर तड़पने, कराहने और मरने लगा । अगर जरा ही पहले एक दूसरी मोटर और कोई साहब वहाँ न आये होते, तो घण्टेके डाकेका भेद धोकेबाज गोयनीके साथ ही नरकका राही बन गया होता ।

किसीकी करुण पुकार सुन—साहबने मोटर रोकी—

शायद वह कहींसे शिकार करके आ रहा था; क्योंकि अब वह गाड़ीसे बाहर निकला उसके हाथमें एक भयानक दो-नली रायफल नजर आयी।

जिस वक्त साहब तड़पते गोयनीके पास पहुँचा, उस वक्त तक उसका तड़पना बन्द नहीं हुआ था—मगर, चिल्लाना अब मन्द हो चला था, मानो मौत उसके गलेको धीरे-धीरे घोट रही थी।

"कौन ? तू कौन ? किसने तेरी ऐसी दुर्गति बनायी—कुछ बोल तो"

"मेरा इनाम देते जाओ—ओ जर्मन साहब ! ओ मेरे मिहरबान जर्मन अफसर...।"

"जर्मन अफ़सर कौन ?" साहबनेपूछा—मगर गोयनी की जान, तबतक पिंजड़ेसे बाहर हो चली थी। आखिर देखते-देखते गोयनी जासूस नरक सिधार गया।

पहले तो वह साहब कुछ कर्त्तव्य विमूढ़वत् दिखाई पड़ा; मगर, तुरन्त उसकी बुद्धि ठिकाने आ गयी। गोयनी-को वहीं छोड़ वह मोटरमें स्टेशनकी तरफ भागा।

उस वक्त रातके कोई ढाई तीन बजे होंगे। स्टेशन सुन-सान—रास्ता सायँ-सायँ करता था। अहातेमें गाड़ी छोड़, साहब सीधे स्टेशन मास्टरके रूममें गया।

"मैं फोन करना चाहता हूँ।"

"किसको—इस रातके वक्त ?"

"बम्बईके पुलिस कमिश्नरको !" फोनके पास पहुँचकर साहब बोला—बहुत जरूरी काम है—हल्लो ; हल्लो !!

"हल्लो ! आप कौन—गामदेवी ? लेमिंटन रोड ? हाँ, मैं पुलिस कमिश्नरसे जरूरी—बहुत जरूरी—मेरा नाम जान रील्स है— हाँ मैं "दि स्विसबेस्ट" कम्पनीका मैनेजिंग डाइरेक्टर !—थैंक्यू—फोन पुलिस कमिश्नरके फोनसे जोड़ दीजिये—थैंक्यू !"

थोड़ी देरतक फोनके भागको कानसे लगाये साहब खड़ा रहा—फिर चौंककर वह उस शब्दग्राही यन्त्रसे बातें करने लगा—

"हाँ जानरील्स—आप मि......कमिश्नर ? सुनिये तो, बोरीवलीके पास एक खून हो गया है। हाँ—मरनेसे पहले वह जर्मन साहबको पुकार रहा था—। जरा जल्द जाँच हो !—मालूम पड़ता है, शायद बदमाशोंने कोई चाल खेली है—कोई जर्मन जहाज आज कलमें छूटने वाला हो, तो उसपर बन्दरगाहकी पुलिस तैनात कर दीजिये।"

और सुबह होनेसे जरा पहले ही कई पुलिस-मोटरें

वहाँ पहुँची, जहाँ घंटेपर पहरा था। अभीतक सिपाही और सारजण्ट बेहोश थे। अब पुलिसवालोंका माथा ठनका। फौरन एक गाड़ी उस बन्दरगाहकी तरफ झपटी, जहाँसे जर्मन जहाज छूटनेवाला था। मगर, बन्दरगाहपर पहुँचनेपर पता चला, कि जर्मन जहाज तो रातके चार बजे ही अपने मुल्ककी तरफ रवाना हो गया।

"जैसे भी हो उस जहाजका पीछा करना होगा"

"क्यों ?"

"उसपर जर्मनीके जासूस लोग इस देशका एक अजीब घण्टा चुराकर लिये जा रहे हैं। उस घण्टेको जर्मनोंके नहीं—अंग्रेजोंके हाथमें रहना चाहिये।"

दूसरे क्षण एक छोटा मगर फौजी और तेज जहाज उस जर्मन जहाजके पीछे दौड़ा।

साथ ही एक हवाई जहाज भी आकाश मार्गसे घण्टेकी खोजमें जर्मन जहाजके पीछे झपटा।

मगर दोमेंसे किसी भी जहाजको सफलता न मिल सकी। जान पड़ता है, हवाकी तेजीसे जर्मन जहाज अंग्रेजी पानीके बाहर चला गया।

अम्बरडम्बर

सन् १९१४ ईस्वीके अगस्त महीनेमें जिस संहारकारी युद्धका यूरोपमें आरम्भ हुआ, उसकी तैयारी कई दर्जन वर्षोंसे देश-देशमें हो रही थी।

लोग प्रेमके लिये प्रस्तुत न हो लड़ने-मरनेके लिये आतुर क्यों होते हैं? खुदगर्जीके मारे! दुनियामें लड़ते वही हैं, जो 'टुकड़ों' के लिये जीते हैं—कुत्तोंकी तरह।

गत महायुद्धसे पहले यूरोपके सभी बड़े राष्ट्र संसार-विजयकी दौड़में एक दूसरेसे आगे बढ़ जाना चाहते थे।

जो चुपड़ी खा रहा था, उसको सोनेकी थालकी और जो थालमें माल उड़ा रहा था उसको अशर्फी बघारकी जरूरत थी। इसी मतलबमें बँधे विभिन्न राष्ट्र शिकारी

कुत्तोंकी तरह एक-दूसरेकी सुविधापर गुर्राते और दुर्दशापर प्रसन्न हो दुम हिलाते थे।

..जर्मनी मजबूत, मशहूर और महान् उस वक्त जो कुछ था उससे सन्तुष्ट, नहीं था। वह प्रधानता और विश्व-प्रधानताका सम्मान चाहता था।

और सुन्दरता-सदन फ्रांस जर्मनीके विकासमें अपने सत्यानाशका कच्चा चिट्ठा ढूँढ़ रहा था। दुश्मनोंसे लड़कर सदियोंतक अन्धकार और कमजोरीमें रहनेके लिये वह तैयार था; परन्तु जर्मनीका उगता सितारा उसको वज्रवत् लगता था।

ब्रिटेन और रूस अपने राज्यों और साम्राज्यसे सन्तुष्टसे थे—मगर, उनके मनमें ऐतिहासिक "मित्रों" का भय था। इसी भयके कारण उक्त महान् राष्ट्रोंकी रिआया सैनिक खर्चोंके भारसे डूब—उतरा रही थी।

एक बात और—पाश्चात्य-राष्ट्रोंने प्राच्य देशोंके प्राणियों-को अपनी कामनाओं और वासनाओंका शिकार बना रखा था। अपने शरीरवादको ऐसे, करीनेसे सजाकर पश्चिम वालोंने पूरबियोंके सामने रखा, कि वे अपने आत्मवादकी अमरता भूल ही गये। फिर क्या था—सादगीपर रंग-बिरंगे रंग सजने लगे। जिनका मन ईश्वर प्रेमकी प्रसन्नता ढूँढ़ता

था, विदेशी सभ्यताकी छापसे उन्हींका तन तन्जेबी ताने बाने सजाने लगा। पूरबके प्राण रसहीन होने लगे। पश्चिमके लाल गाल खिलने लगे—गोलगप्पेकी तरह...!

कहावत है—'सहिजन अति फूलै तऊ डार-पातकी हानि'। चकाचक मांसखानेवाले कुत्ते हवासे उलझते हैं। कुत्तोंके व्यर्थ भोंकनेसे उनका हराम हजम हो जाता है। शायद वैसा ही कुछ माल पचानेके पहले पश्चिमीय राष्ट्र सन् १९१४ ईस्वीमें बमक और बहक रहे थे।

खून पीकर मांस और हड्डी हजमकर मदान्ध यूरोपीय मानव आपसमें कट मरनेके लिये तैयार हो गये। जिनको कमजोर इन्सान नहीं मार सकता, उनको मारते हैं भगवान और उनका दारुण मारण-अस्त्र है—युद्ध !!

सन् १९१४ से पहले संसारके सभी जाग्रत राष्ट्र लोहेसे लोहा ठनका कर एक बार महाकालसे विजय-हार लेना चाहते थे। जिस बातको सब या बहुत लोग चाहते हों वह एक-न-एक दिन होकर ही रहती है और हुआ भी कुछ ऐसा ही।

एक छोटे नगण्य देशके किसी मामूली युवक विद्यार्थीने दूसरे छोटे देशके महाराज कुमारको किसी मौकेपर ताक मारा। पुआलमें चिनगारी चमकी और देखते ही

देखते मूर्खोंकी झोपड़ियोंसे धुआँ फूटने लगा और चिनगारियाँ छूटने लगीं !

सर्वियाकी पीठका रूस रक्षक बन गया। संगीन सीधी किये। अस्ट्रियाका हिमायती बना जर्मनी। सर्वियाकी तरफ मतलबसे फ्रांस लपका—जर्मनीकी तरफ दूसरी गरजसे तुर्क लोग आ मिले। बेचारे बेलजियनोंकी रक्षाके लिये साधु लायड जार्जकी सरकारने भी ब्रिटिश साम्राज्यकी सारी शक्ति भिड़ा दी।

सर्वियन विद्यार्थीकी मूर्खतासे या जर्मनीके भयानक बढ़ते हुए प्रभावसे, युद्ध समयसे, ज़रा पहले ही छिड़ गया। तभी तो युद्ध घोषणाके पूर्व कैसरने अपने चार चतुर सलाहकारोंसे बिचार किया......

"अब बिना लड़े काम चलनेका नहीं—मगर, अपनी तैयारीमें..."

"कोई भी कसर नहीं है सरकार !" महान् जर्मन सेनापतिने सगर्व निवेदन किया—"हमारी तैयारी ऐसी पूरी है कि जो हमारे ख़िलाफ़ लोहा लेगा, उसको छठीका दूध याद आ जायगा।"

"विषैले धुओंके हम विधाता हैं।" दूसरे जर्मन वैज्ञानिकने कहा—'हवाई विमान हमारे पास ऐसे हैं, जैसे पुराने

वैदिक युगके आर्योंके पास थे। हर तरहसे हम विश्व-विजयके लिये तैयार हैं।"

"ठीक है—"कैसर मुस्कराकर, मूछोंपर हाथ फेरकर बोले—"सबसे बड़ी बात है हमारी आर्य सेना। एक-एक जर्मन बीस-बीस दुश्मनोंके लिये अकेला बहुत है।"

"जब तक एक भी जर्मन जीवित रहेगा, तब तक हमारी पितृभूमिकी पताका झुकेगी नहीं।"

साधु!' कैसरने कहा—"लेकिन युद्ध घोषणाके पहले यदि आर्य आशोकको महान् घण्टा मुझे मिल जाता, तो हम अजेय बन जाते।"

"आनन-फाननमें हुजूर!" एक मन्त्रीने निवेदन किया—"घण्टेके साथ हेर कीलर ग़रीबपरवरकी क़दम-बोसीका नियाज़ जल्द ही हासिल करेगा। बम्बईसे घण्टा उड़ाकर हवामें उड़ता हुआ कीलर बर्लिनकी तरफ़ आ रहा है।"

"उसे हवाई तारसे जल्द बुलाओ! रात दिन उड़नेका आदेश दो और युद्ध छेड़नेकी सूचना उनको दे दो, जो हम-से लड़े बिना आरामसे सो नहीं सकते। एक बार आर्य जर्मनी सारे जहानको मैदानमें हरानेकी पवित्र चेष्टा करेगा।"

"आमीन! आमीन!" उठकर सबने ताज़ीम की।

न्यायका दिल

यद्यपि हेर कीलर जासूसकी हैसियतसे हिन्दोस्तान भेजा गया था, फिर भी, वह मामूली जासूस नहीं था।

वह पढ़ा-लिखा और सैनिक था। इतना ही नहीं, जर्मन सेनाकी एक टुकड़ीका वह छोटा नेता लेफ्टिनेण्ट भी था।

फ्रेञ्च जहाजपर मांशियर मोपलेके रूपमें और भारत वर्षके शहरोंमें घण्टेकी तलाशमें रूप रूपमें घूमनेवाला बोरी-वलीका वह खूनी पठान, जर्मन भेड़िया कीलर था।

और वह जासूस जो हुनर और ऐय्यारीमें यकता हो—नफरतकी चीज नहीं। दुनियाकी सलतनतें बिना भेद और भेदियोंके चल नहीं सकतीं। मगर, ऐसा क्यों ?

शायद इसलिये कि राजधानीके अफसरोंमें जिनके

पास माथा होता है उनकी आँखें बन्द और कान खुले होते हैं।

डरकर गरीबोंने इस बातपर लोकोक्ति बना रखी है कि—"राजाको आँखें नहीं—और कान ही होते हैं।"

जो हो, जर्मन जासूस कीलर बम्बईसे घण्टा लेकर कैसे भागा, इसकी कोई सही रिपोर्ट हम नहीं दे सकते। बोरीवलीमें यदि उस गोयनीका खून न हुआ होता, तो इतना पता भी न लगता कि पठान बेशधारी व्यक्ति कोई जासूस था।

अंग्रेजी जहाजने खदेड़कर जिस जर्मन जहाजकी तलाशी लेनी चाही — मगर, जो धूल डालकर साफ गायब हो गया—उसी जहाजमें घण्टा था, यह कैसे माना जाय।

कैसरके सामने घण्टा वहींके हवाई जहाजी अड्डेपर आया, जहाँ विज्ञानशाला है। उसी एम० नामक कस्बेमें।

हवाई जहाजसे पहले लम्बा, तेजस्वी प्रसन्नबदन कीलर उतरा। सामने लम्बे-तगड़े मुच्छीले सिंहकी तरह आर्य कैसरको खड़ा देख कीलरने कठोर फौजी सलामी दी।

मगर कैसरकी नजर कीलरपर एक ही बार गयी—वह

भी नफरत भरी। और कैसरकी नजर लगी रही हवाई जहाजपर, जिसके बाहर आयें, अद्‌भुतकर्मी अशोकका महान् विजय-घण्टा निकाला—उतारा जा रहा था।

सावधानीसे एक सौ एक मनका घण्टा वहाँकी जमीन-पर उतारा गया। तुरन्त सात भाषा-पण्डित घण्टेपर लपके और कैसर उनमें अव्वल था।

पहले सबने घण्टेपर स्वास्तिकका चिह्न देखा। सभोने उस चिह्नके सम्मानार्थ, सैनिक रीतिसे स्वस्तिकको सलाम किया—सादर !

इसके अलावा घण्टेके चारों ओर पाली-भाषामें आर्या-छन्दोंमें घण्टेकी कथा लिखी थी...

॥ दोहा ॥

"बिन्दुसारके पुत्र श्री, श्री सम्राट अशोक
हुए विदित दल-बल लसे, जस फैला त्रैलोक
देश-नगर जीते विविध, अंगरु बंग पिकिंग
किन्तु वीर बीहड़ बसे, जगी संग कलिंग
आर्य गुप्त-वंशी-मुकुट, चन्द्रगुप्त बलवान
लड़े कलिंगी लोहसे, लाभ लोभ हैरान
चन्द्रगुप्तके तनय श्री, बिंदुसार धीमान
लड़े कलिंगी लोगसे, लगे शत्रु बलवान

बिन्दुसारके पुण्य-सुत, श्री श्रीमान अशोक

लोक-लोक लोकप जिते, तमक तके त्रैलोक

फिर भी जंगी लोग थे, बड़े कलिंगी वीर

लड़े लड़े छोटे बड़े, कड़े-कड़े रणधीर !

यन्त्र थके पावक प्रकट, फिर भी परम स्वतंत्र,

जगे कलिंगी जङ्गमें कौन करे परतन्त्र...?

थके यन्त्रसे, पके-दिल, देवप्रिय सम्राट

पूज्य विप्रसे पूछने—लगे मन्त्रकी बात

सदा आर्य-कुलसिर-मुकुट, मणि द्विजराज महान

तन्त्र-मन्त्र यन्त्रादिके साधक सिद्ध सुजान !

हो प्रसन्न सम्राटहित, बोले वचन अमोघ,

प्रबल मन्त्रसे, घण्ट एक, मैं रच दूँ संयोग

विश्व-विजयका—सोचही, छोड़ो अब सम्राट...

तन्त्र-मन्त्र युत घण्टसे सजो सिपाही ठाट !

आर्या-छन्दोंमें लिखे उपर्युक्त दोहोंके अलावा न जाने किन अक्षरोंमें कुछ और भी लिखा था। उसको उन लाल जर्मन-आर्य महोदयोंमेंसे एक भी न समझ या पढ़ ही सका।

उधर हेर कीलरने कैसरको सलाम कर चारों ओर जो नजर दौड़ायी, तो सैनिक पहरेका प्रबन्ध देखा और मैदान

में जैसे किसी फौजी मेलेकी तैयारी होती हो। "क्या है यह सब ?" उस वृद्ध वैज्ञानिक जर्मनसे कीलरने पहला ही सवाल किया।

"आपके स्वागतकी तैयारी—कैसर आपपर निहायत ना...ना खुश हैं।" बूढ़े वैज्ञानिकने गम्भीर जवाब दिया।

"मगर, आप प्रसन्न क्यों नहीं हैं—आप मुझपर नाराज़ तो...?" कीलरने बूढ़ेकी दाढ़ीपर हाथ फेरकर प्रेम दिखाया।

"कीलर !" जैसे बड़ा मकान गिरता हो उसी आवाज़से कैसरने पुकारा।

दूसरे क्षण कीलर कैसरके सामने सैनिक क़ायदेसे खड़ा था।

"मेरे साथ आओ !" कैसर मैदानकी तरफ कीलरको ले चले।

बीच मैदानमें एक ऊँचा तख्ता रखा था। वह फूलोंसे खूब सजाया गया और सुनहला था।

तख्तेके पास कीलरको ले जाकर कैसरने उसपर उसको अपने हाथसे सादर बैठाया।

"आर्य अशोकका विजय-घण्टा कई हज़ार कोसोंसे जो बुद्धिसे उड़ा लाये—बेशक वह आर्य है, वीर है और जर्मन है।"

"हेर कीलर !" संगीनें तानकर सारे प्रुशियन, रोबीले तगड़े सैनिकोंने जयनाद किया।

कैसरने कीलरको अपनी तलवार भेंट दी, उसके फौजी कोटपर एक रत्न-जटित तमगा लगाया।

"वीरवर कीलर !" सतेज कैसर बोले—"यह सब तुम्हारी अद्भुत वीरता और चतुरताका पुरस्कार है।"

"जय हो महा—सम्राट्की।" कीलरने प्रसन्नतासे पुनः पुनः अभिवादन किया।

"मगर" कैसर बोले—"फ्रेंच जहाजपरकी असावधानीके लिये मैं तुम्हें दण्ड भी दूँगा—और अभी—तुम्हारी कोई इच्छा—अभिलाषा ?"

"क्यों ?" कीलर कुछ समझ न सका।

"क्योंकि, उस अपराधके लिये अभी तुम तोपसे उड़ा दिये जाओगे।

"तुम अपने बच्चों और बाबासे एक अरसे बाद मिलनेको उत्सुक हो ? क्यों हेर कीलर !"

"अवश्य गरीबपरवर !" कीलरने नम्रता दिखायी—"आदमीको परिवार—और बच्चोंका खासकर—मोह होता ही है।"

"लेकिन अब जिन्दगीमें...।" गम्भीर कैसर बोले—

"तुम अपनी बीवी या बच्चे या दोस्तोंसे नहीं मिल सकते।"

"क्यों ? ऐसा क्यों मेरे आका ?"

"इसलिये कि तुम अभी तोपसे उड़ा दिये जाओगे।"

"तोपसे मैं उड़ाया जाऊँगा ? ऐसा क्यों राजेश्वर ?"

"यही सैनिक नियम है। जिस तरह आज्ञाके विरुद्ध महज एक सिगरेट जलानेके लिये नेपोलियनने एक सिपाही-को उड़वा दिया था—जिस तरह उजड़े मेवाड़में, आज्ञा-विरुद्ध बकरियाँ चरानेवाले गड़ेरियोंको आर्यवंशावतंस महाराणा प्रतापने मरवा दिया था—वैसी ही गति तुम्हारी भी होगी।"

"ऐसा क्यों ? शाहंशाह मेरे ! मुझसे ऐसी क्या खता बन पड़ी ?"

"बहुत बड़ी खता—घण्टा लानेको हिन्दुस्तान जाते हुए फ्रेंच जहाजपर तुम्हारा गिरफ्तार हो जाना भीषण राजनीतिक अपराध है।"

"मगर आर्य !" कीलर घबराया नहीं—"एक स्त्रीको बचानेके लिये समुद्रमें कूद पड़नेके कारण ही मेरी कलई खुल गयी थी।"

"सैनिक, आज्ञाके विरुद्ध, अच्छा काम भी नहीं कर

सकता—फौजी आज्ञाकी कठोरता ऐसी ही होती है। उसको नम्र करनेवाला गर्म बारूदके धुएँमें उड़ाया जाता है।"

"हुजूर..."

"चुप रहो! अगर फ्रेंच जहाजसे हम तुम्हें न बचाते तो, उसी दिन जर्मनी और फ्रांससे लड़ाई छिड़ जाती। तैयार तो लड़नेके लिये हम आज भी नहीं हैं, मगर उस दिन लड़ाई छिड़ी होती तो हम बेशक हार जाते।"

"मैंने बड़ी मेहनतसे अपने पितृदेशकी विजयके लिये आर्य अशोकका महा-घण्टा यहाँ लाकर हाजिर किया है।"

"उसीके पुरस्कारमें मैं—कैसर—ने तुम्हें महत्वका उच्चासन, तलवार और तमगे दिये हैं, मगर जहाजकी भूलका फल भी तुम्हींको चखना पड़ेगा—चलो हे!" कैसर गर्जे—"इस नालायक आफिसरको अभी तोपदम कर दो!"

चार सैनिक-प्रुशियन कैसरकी आज्ञा पालन करनेको तुरन्त सामने आये। उन्होंने पहले हेर कीलरकी तलवार लेनी चाही—

"नहीं, नहीं। कैसरके राज्यमें वीरका अपमान नहीं हो सकता है। इज्जतके साथ वर्दी-पेटी सहित इसको तोपसे बाँधकर उड़ा दो!"

फिर कीलरने एक बात भी न की। उसको दूसरे सैनिकोंने मैदानमें अड़ी खड़ी एक भयानक भुसुण्डीसे बाँधा।

"क्या तुम अपनी बीबी या बच्चेसे मिले बगैर आराम-से न मर सकोगे?" कैसरने कीलरसे पूछा।

"मरूँगा" मुस्कराता हुआ "हुजूर!" कीलरने कहा—"हम आर्योंको यही सिखलाया गया है कि शरीरकी कोई कीमत नहीं...कीमती होते हैं सत्य, ईमान और ईश्वर!"

"शाबाश! वीर!!" कैसरने दाद दी और किया तोप-चलानेवालेकी तरफ इशारा!

घुड़ुम! घुड़ घुड़ घुड़ घुड़ुम!!!

आर्य अशोकका घण्टा बोरीवलीके पाससे, गोयनी पाजीकी मददसे उड़ानेवाले पठानवेशी कीलरकी जान-घण्टेके जर्मनीमें पहुँचवे ही ले ली गयी!!

नियमन

"तो हेर कीलर...?"

"कैसर विलियम द्वितीयकी आज्ञासे तोपदम कर दिया गया...।"

"और अपने नादान नन्हें बच्चे तथा वृद्ध पिताके सामने ?—महा-अनर्थ—! कैसरकी यह आज्ञा चंगेजी है—नादिरी !!"

"धीरे बोलो !" दूसरे जर्मन नागरिकने बर्लिनकी एक आम सड़कपर अपने पड़ोसीको सावधान किया—"विलियम द्वितीय महान् कैसरके विरुद्ध जुबान हिलानेसे बर्लिन या तमाम जर्मनीकी हवा भी कान लगाकर सुन लेगी और फिर कैसर-विरोधीको जानोंके लाले पड़ जायँगे।"

"कोरे भय और रोबकी हुकूमत देर-पा नहीं होती। आर्योंका धर्म प्रेम है, भय नहीं।"

"आर्योंका धर्म सत्य पूर्ण-न्याय है। आर्योंका धर्म विषैले व्यक्ति-रूपी-फोड़ोंपर तलवार चलानेको कहता है, जिससे समाज-शरीर नीरोग रहे। साथ ही धर्मपर संकट आनेपर आर्योंका धर्म चिर-पोषित शरीरको कुर्बान कर देनेकी सलाह भी देता है—जिससे विश्व और उसके बच्चे यह अच्छी तरह समझते रहें, कि शरीर ही सब कुछ नहीं है, बल्कि उससे कहीं बड़ी महान् कोई आत्मा भी है; जिसे हम—परमात्मा, धर्म, सिद्धान्त, आदर्श, इष्ट आदि नामोंसे पुकारा करते हैं। मेरे भाई! हम आर्योंका धर्म बड़ा ही सूक्ष्म है। क्रिश्चियनोंकी तरह हमारा कल्चर कुछ कल या परसोंका नहीं, युग-युगान्तरों—बरसोंका है। हेर कीलरने ऐसी गलती की थी जिसकी सजा मौत ही—सिद्धान्तवादी जर्मनीमें, आर्यस्थानमें—हो सकती है।"

"क्या गलती की थी उसने...?"

"यहाँसे घण्टा लानेके लिये हिन्दुस्तान जाते वक्त एक भारतीय नरेशके बचावमें वह समुद्रमें कूद पड़ा था—पागल!"

"वाह! महान् आर्य-कर्म! इसके लिये कैसरने बेचारे कीलरको तोपदम करा दिया! धन्य है! नमस्कार करने योग्य है यह राजनीति, यह न्याय और यह आर्य-धर्म—!!"

"पहले समझो !" उत्तेजित नागरिकने अपने वृद्ध पड़ोसीपर तरस खाकर कहा—"पहले समझो ! राजनीति या सूक्ष्म धर्म ऐसी चीज नहीं, जिसे ऐरे-गैरे सभी समझ सकें। बेशक, हिन्दुस्तानी राजाकी जान बचानेके लिये दरियामें कूदकर खतरा उठाना वीरता, मनुष्यता और धर्मका काम था; लेकिन उससे भी एक महान् काम कीलर को पहले ही सौंपा गया था—दिग्विजयी घण्टा लाकर जर्मन जातिको दिग्विजयी बनानेका—और यही काम ज्यादा जरूरी था; जिसे भावुकतामें कीलर मौकेपर भूल गया। धर्म और अधर्ममें 'अच्छे' को चुन लेना बिलकुल मामूली बात है। मगर, धर्म और धर्ममें 'स्व'धर्मका चुनना आर्यत्व—मनुष्यत्व है।

"कीलरको स्वयं कैसरने विश्वास-पात्र और वीर समझा था; मगर, खरा होकर भी जर्मनीकी वज्र-कसौटीपर कीलर सोना सिद्ध न हो सका। अतः ईश्वर-रूपी राजा-द्वारा पुनः आगमें झोक दिया गया—तपते-तपते कभी सोना सौ-टाँक बननेके लिये। कैसरने सांसारिक, राजनी-तिक और पारमार्थिक, सभी दृष्टियोंसे, कीलरको उचित दण्ड दिया है।"

"भाई !" मानो कुछ-कुछ समझते हुए वृद्ध पड़ोसीने

कहा,—"तुम तो दार्शनिक हो, फिलासफीके अध्यापक हो, कमसे कम तुम्हें तो दयालु होना चाहिये ?"

"ऐसा ही मैं भी कह सकता हूँ कि, जनाब आप तो बूढ़े हैं, और पुराने सिपाही हैं—कमसें कम आपको राजाज्ञामें विश्वास होना चाहिये—अन्ध-विश्वास ?"

"राजाज्ञासे ही, महोदय ! इस उम्रमें भी बन्दा एक बार फिर वर्दी पहनने जा रहा है।"

"और जल्द ही मैं भी किताबें तालेमें बन्दकर, कन्धेपर बन्दूक रख, जर्मनीके विश्व-विजयको सत्यका स्वरूप देता नजर आऊँगा।"

"अच्छा, उस घण्टेमें—मूर्खता ! हा हा हा हा ! तुम्हारा विश्वास है ? क्या उसकी सहायतासे हम संसारको अपने वशमें कर सकेंगे ? फुह !"

"बात यह है···"दार्शनिक जर्मन नागरिकने गम्भीरता-से कहा—"भारतवर्षका ज्ञान-भाण्डार अगाध है। वहाँके साधकोंने विश्व-विजय ही नहीं, त्रिभुवन-विजयकी युक्तियाँ निकाली थीं। जो हो, भाषा-ज्ञानीकी हैसियतसे घण्टेपर लिखी कुछ अस्पष्ट लकीरें पढ़नेके लिये, मैं भी बुलाया गया था—और मैंने देखा वह घण्टा दर्शनीय, ऐति-हासिक, कलापूर्ण और अद्वितीय है। उसपर की पालीमें

लिखी-आधी ही बातें अबतक जर्मन विद्वान् समझ पाये हैं—आधी लकीरें, अक्षर, मात्रायें साफ होकर भी क्या हैं, कोई पढ़ नहीं पाता।"

"और इस विचित्र घण्टेको कीलर—ईश्वर उसकी आत्माको शान्ति दे!—चण्ट अंग्रेजोंकी आँखोंमें धूल डालकर सात समन्दर तेरह नदी पारसे उड़ा लाया! भई, मुझे माफ करना! कीलरने ऐतिहासिक-वीरों सी बहादुरी दिखायी। बेशक आज वह राज-दण्डका शिकार हुआ, मगर जर्मन-दिग्विजय होनेपर आर्य-बच्चे कीलरकी कवितायें रचेंगे और गायेंगे।"

"फिर भी नहीं समझे;" दार्शनिक जर्मन दूरकी लाता था—"जब हम विश्व-विजयी होंगे तब कीलरको नहीं, कैसरको नमस्कार करेंगे, जिनकी वजहसे आज हमारे देशके घर-घरमें कीलर भरे पड़े हैं और—'हेर'।

रावणाय स्वस्ति......!

और सन् '१४' में जो योरोपीय महायुद्ध शुरू हुआ उससे जर्मनी क्या चाहता था? फ्रांसके मनमें क्या बात थी? आखिर रूसी लोग योरोपकी इस लड़ाईसे दिलचस्पी क्यों रखते थे? बनियाँ और मालदार, परस-चतुर बृटेनने ही अपना शान्ति-भंग क्यों किया?

इसका उत्तर देते हुए एक पक्षका इतिहास कहेगा कि, सारा दोष जर्मन जातिवालोंका ही है जो क्रिश्चियन होते हुए भी अपनेको 'आर्य' कहते हैं और महात्मा ईसामसीहकी भेड़ोंका ऊन लूटकर अपना व्यापार चमकाना चाहते हैं, तथा खून घूँटकर तोंद फुलाना।

दूसरे पक्षका इतिहास सारा दोष मित्र-राष्ट्रोंके माथेपर मढ़ेगा और कहेगा कि गत महायुद्धका दोष उनके माथे

पर है, जिन्होंने सदियोंसे कल, बल और छलसे अपना साम्राज्य-जाल फैलानेका भयानक सफल उद्योग कर रखा है। फ्रांस, बृटेन, रूस और अमेरिकाकी तरह साम्राज्य-सम्पन्न महाराष्ट्रोंसे बुद्धि, बल, योग्यता या कुलीनतामें अनेक राष्ट्रोंके नागरिक बाल बराबर भी कम नहीं हैं; मगर, उक्त साम्राज्यवादियोंकी कूटनीतिके कारण ही दूसरे योग्य महाराष्ट्र विश्व-रङ्ग-मञ्चपर अपनी प्रतिभा प्रकाशित कर ही नहीं पाते। अतः स्वार्थान्ध मतवालोंका सुधारक युद्ध ही हो सकता है।

और इसी तरह दोनों तरफके इतिहास स्वार्थके दर्पण-में झाँक-झाँककर एक दूसरेका मुँह काला देखेंगे। अपने-को 'राम' और विरोधीको 'रावण' कहेंगे। स्वयंको न्यायी 'नौशेरवाँ' और परको अन्यायी 'नादिर' बतलायेंगे। ज्ञानके नामपर दोनों पक्षके बड़े-बड़े अज्ञानी आपसमें धूल उड़ा-येंगे। फलतः बेचारे सत्य-शोधक जिज्ञासुओंको अन्धकार ही नजर आयेगा। उनकी तेजसे तेज आँखोंमें, अनायास ही, धूल भर दी जायगी!

मगर, हमारा काम तो इतिहास लिखना नहीं, गप मारना है। इतिहासकार लोग गम्भीरतासे गप मारते हैं और हम मचलती चञ्चलतासे। बस, हम दोनोंमें इतना ही

अन्तर स्पष्ट है। जो हो, हम तो गप मारेंगे। हमको इस या उस पक्षसे कुछ लेना या देना नहीं! हम तो उदार, निर्लिप्त-ब्राह्मणकी तरह रामको देखकर कहते हैं--"रामाय स्वस्ति!" और—असुरेन्द्रसुरारि, पण्डितराज, लंकेश्वरको देखकर कहते हैं--"रावणाय स्वस्ति!"

गत महायुद्धके हमें दो ही मुख्य कारण मालूम हैं। जिनमें प्रथम है, अशोक देवप्रियका दिग्विजयी घंटा और द्वितीय, आस्ट्रियाके आर्क ड्यूककी बोसनियाँकी राजधानी सेराजेवोमें एक सर्बियन विद्यार्थी द्वारा हत्या। हमारा अनुमान है कि आस्ट्रियाके आर्क ड्यूक फर्डिनेण्डकी हत्या बोरीवलीके घंटेक ग़ायब होनेके बाद ही हुई होगी। तभी तो गत महायुद्धके छिड़ जानेके हफ्तों बाद हेरकीलर उसको जर्मनीमें ला सका। गत महायुद्धका घटनाक्रम इस प्रकार होनी चाहिये—

बोरीवलीसे घण्टेका ग़ायब होना—बोसनियाँमें आर्क ड्यूककी हत्या--आस्ट्रिया और जर्मनीमें भयानक सलाह-मशविरे! एक विद्यार्थीके अपराधके लिये आस्ट्रिया-हंगरीका सर्बिया देशपर महाकोप—और दुर्बल-के-बल राम! सर्बियाकी पीठपर रूसकी तैयारियाँ—इसी वक़्त कैसरको

यह सूचना मिली कि, हेर कीलर शत्रुञ्जयी-घण्टेको ला रहा है। कैसरकी प्रचण्ड दिग्विजय कामना।

१ अगस्त १९१४ को आस्ट्रियाके पक्षमें जर्मनी, सर्बिया-समर्थक रूसपर चढ़ बैठा और इसके दो दिन बाद ही कैसरने फ्रांसके विरुद्ध भी युद्ध घोषणा कर दी !

बेचारा बेलजियम ! बेलजियमको सब राष्ट्रोंने तटस्थ देश मान रखा था और यह समझौता था कि, फ्रान्स या कोई भी—बेलजियमकी सीमाओंको भेदकर किसीपर आक्रमण न कर सके। मगर, जर्मन शक्तिकी प्रचंडताके बलपर कैसरने कभी किसी समझौते या सन्धि या प्रतिज्ञापर विचार नहीं किया। कूट-नीतिके लिये राज-नीतिक प्रतिज्ञायें और सन्धियाँ वैसे ही होती हैं जैसा वेश्याके लिये प्रेमाभिनय। कैसरने सोचा दिग्विजयके बाद बेलजियमको खुश कर दिया जायेगा, मगर, इस वक्त तो नियम तोड़कर बेलजियमकी ओरसे फ्रान्सकी गर्दन पर चढ़ना चाहिये। और बेलजियममें जर्मन सेनायें घुसीं। भुनगे-सा बेलजियम भूधराकारा जर्मनीके संघर्षसे घबराकर सारे संसारके सामने—त्राहि ! त्राहि !—चिल्ला उठा, और सारे संसारने स्वयं त्राहि त्राहि पुकारनेसे पहिले बेलजियमको बचानेकी

कोशिश की। ४ अगस्तको, दिनके ग्यारह बजे ग्रेट-ब्रिटेनने भी संसार-विरोधी जर्मनोंके विरुद्ध युद्धघोषणा कर दी।

इस तरह गत महायुद्धमें आदिसे अन्ततक एक तरफ रूस, फ्रांस, ग्रेटब्रिटेन, बेलजियम और सर्बिया और दूसरी तरफ जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, तुर्की और बलगेरिया लोहे और आगके खेल खेलते रहे। और इटली, रोमनोंकी महान् इटली, कभी सन्धिसे सगे जर्मनीकी तरह और कभी संख्या और सम्पत्तिसे लदे मित्र-राष्ट्रोंकी तरह लालचसे बे-पेंदेके लोटे सा लुढ़क रहा था।

और वह जर्मनी, जिसका मुख्य व्यापार एक फ्रांसीसी राजनीतिज्ञके शब्दोंमें "युद्ध है"—एक साथ ही दो मैदानों-में दस-दस दुश्मनोंको दिग्विजयके जोशमें दर्पसे दबोचने लगा...!

महायुद्ध

इस तरह तान्त्रिक-आर्य ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र-पूत अष्टधाती घण्टेने दो दो महायुद्धोंका सामना किया और दोनों ही युद्धों-के परिणाम कल्पनातीत भयानक हुए।

सम्राट् अशोकने कलिङ्गपर ईस्वी संवत्से २६१ वर्ष पूर्व चढ़ाई की थी। इतिहासकी धुँधली रेखाओंसे पता चलता है कि बङ्गालकी खाड़ीके तटपर महानदी और गोदावरीके बीच विस्तृत कलिङ्ग-राज्य उस समयकी सैनिक-शक्तिके अनुसार महान् शक्तिशाली था। यूनानी इतिहासज्ञ मैगस्थनीजके मतानुसार कलिङ्ग-राज्यके पास जो सेना थी, उसमें ६० हजार प्रचण्ड पैदल, १ हजार घनघोर घुड़सवार और सात सौ मस्त हाथी थे। यह सेना उक्त राज्यकी शांति कालीन शक्ति थी, जो अशांति या युद्ध-कालमें अवश्य ही अनेक गुनी अधिक हो गयी होगी।

उधर दिग्विजयिनी मागधी-सेनाके पैदल, सवार और हाथियोंका गिनना ही असम्भव है। तभी तो, दिग्विजयी घण्टेसे बली, गरुड़ध्वजसे सुशोभित, महान् अशोकके तेजसे प्रचण्ड-प्रज्वलित मागधी सेनाने उस युद्धमें हजार दृढ़ता दिखलानेपर भी कलिङ्ग-राजके धुर्रे उड़ा दिये थे।

उस युद्धमें एक लाख कलिङ्गीय वीर-गतिको प्राप्त हुए। डेढ़ लाख बहादुर घायल एवं कैदी बनाये गये और कई लाख बेचारे मनुष्य, युद्धके बाद आनेवाली आधि-व्याधि-उपाधिके शिकार हुए। आह! तभी तो देवप्रिय, महापुरुष अशोकका भावुक हृदय दया और करुणासे लहरा उठा था।

मगर, एक दूसरे साम्राज्य-लोलुप सम्राट् कैसर विलियम द्वितीयको, दिग्विजयके प्रलोभनमें अष्टधाती आर्य-घण्टेने महायुद्धके जो भयानक करिश्मे दिखाये, वे अकथनीय हैं। आज उनका विचार भी करनेसे कलेजा काँप उठता है।

सन् १४ से १७-१८ तक पूर्व और पश्चिमके मैदानोंमें जो खूनी होली खेली गयी, उसका कारण हम अशोकके घण्टेको ही समझते हैं। मगर, पागल इतिहास हमारे मतका खण्डन करता है और मोटी-मोटी किताबोंमें, भैंसकी तरह काले अक्षरोंमें, कुछ और ही कहानी कहता है।

इतिहास कहता है, कि अशोक-कालीन घण्टेका कैसर-कालीन युद्धसे कोई भी सम्बन्ध नहीं । कैसर-कालीन युद्ध, मित्रोंके इतिहासके अनुसार, जर्मन-जातिकी उन मनोवृत्तियोंके संघर्षके कारण हुआ जिनके जनक जर्मनीके अनेक दार्शनिक विद्वान् और तपस्वी हैं, जिनके नाम हैं—नित्शे, हेजेल, मार्क्स तथा महापुरुष और महामनस्वी बिस्मार्क ।

इधर कई सदियोंसे सारा संसार भयसे, प्रेमसे या सम्मानसे जर्मनीको विज्ञानमें, ज्ञानमें, बल और जाति-अभिमानमें परम-प्रचण्ड और श्रेष्ठ मानता है । यह क्यों ? आप जानते हैं ? जान लीजिये । जर्मनीकी सारी प्रतिष्ठाके कारण हैं उसके उक्त—तपस्वी दार्शनिक ।

मित्रोंके मतानुसार उन्हीं दार्शनिकोंने जर्मन-जातिको अग्निकी तरह तेज और बिजलीकी तरह प्रगतिका सन्देश दिया है । उन्होंने यह बतलाया है कि—"लाख बरस गीदड़-की तरह जिन्दगी बितानेसे कहीं अच्छा है पलभर सिंहकी तरह शानसे जीना ।"

उन्होंने सिखलाया है कि—"मनुष्य-जीवनकी सार्थकता मामूली ऐशो-आरामसे और स्वार्थ-साधनसे कहीं ऊँचे, कहीं दूर है । मनुष्य-जीवनकी सार्थकता किसी

विश्व-हितकारी या देश-हितकारी या जाति-हितकारी महान् सिद्धान्तके पीछे मर मिटनेमें है।

उन्होंने, वज्र-वीणापर अग्नि-रागको प्रलय-स्वरमें गाया—"हे अग्नि पुत्रो ! तुम सूर्यसे विकसित अग्नि-पुष्पके फल हो, आगसे डरो मत तुम ! आगसे हमारा जीवन है, आगसे भोजन है और पाचन भी हमारा आगसे ही है। चूल्हेमें आग, धूनीमें आग, भट्ठीमें आग—कहीं हमारी गृहस्थीका, कहीं देवता और व्यापारका पालन, पूजा और प्रचार करती है। आग—पवित्र आगसे तुम खेलो, डरो मत हे आर्य अग्नि-पुत्रो !"

मित्रोंके मतानुसार जर्मनीके चाणक्य महामन्त्री बिस्मार्ककी (लहू और लोहा) नीति ही गत महायुद्धके लिये उत्तरदायिनी है। जर्मनीको डेनमार्क, आस्ट्रिया, फ्रांस और अफ्रिकामें बार-बार विजयिनी बनाकर, जिस बिस्मार्कने (सन्तुष्ट राज्य) बना दिया था, उसी बिस्मार्कने (विश्व-शक्ति) बननेका मन्त्र भी अपने तेजस्वी अनुगामियोंको दिया था और यद्यपि विलियम द्वितीयके कैसर होते ही, शासन और व्यवस्थाकी बागडोर बिस्मार्कके हाथसे छीन ली गयी थी, फिर भी; कैसरकी पालिसी (नीति) बराबर वही रही जो भयानक बिस्मार्ककी थी।

महायुद्धके आरम्भके पहले कैसरके अनेक राजनीतिक भाषण ऐसे गर्म हुए थे, जिनके शब्दोंमें, बिजलीकी तरह नित्शे और बिस्मार्कके आग, लहू और लोहे लहरा रहे थे ! योरोपके अ-जर्मन इतिहास-लेखक उन भाषणोंको, गुरु-मंत्रकी तरह आज भी जपते हैं और कहते हैं, कि उन्हींमें युद्धका निमंत्रण था !

जो हो भाई ! हम तो हैरान आ गये इस लम्बे-चौड़े सन्दिग्ध और पक्षपात-पूर्ण इतिहाससे। यह गत महायुद्धकी जिम्मेदारी पहले तो जर्मन दार्शनिकोंकी देहलीपर पटकता है और फिर, सारे महान् राष्ट्रोंकी लोलुप-राजनीतिके माथे मढ़ता है। कहता है—गत महायुद्धके पहले सभी राष्ट्र एक दूसरेको सन्देहकी दृष्टिसे देखते थे। फ्रान्सका सन्देह ब्रिटेनपर था, क्योंकि मिश्र और सूदानके तवेपर दोनों ही अपनी-अपनी रोटियाँ सेकना चाहते थे। ब्रिटेनका सन्देह रूसपर था, जो फ्रान्सका मित्र और भारतके निकट था। मोरक्कोके मसलेपर फ्रान्स और जर्मनीमें कोलाहल मचा हुआ था। बगदाद-बर्लिन-रेलवेके कारण पूर्वमें ब्रिटिश साम्राज्य खतरेसे खाली नहीं था।

अस्तु, सन्देह-शिथिल इतिहासको घण्टेके सामने अविश्वसनीय मानकर हम, गत युद्धकी सारी जिम्मेदारी,

उसी दिग्विजयी ब्रह्मास्त्रपर रखते हैं। अतः सन् १४ से १८ तक घण्टेके कारण जैसी भयानक युद्ध-लीला हुई, वैसी कभी नहीं हुई थी, यह तो हम दावेके साथ कह सकते हैं। हाँ; कभी फिर होगी या नहीं—इसकी भविष्यवाणी करने की पात्रता हममें नहीं।

अशोक-कालीन युद्ध जिन हथियारोंसे लड़ा गया था, उनसे कहीं अधिक जबरदस्त शस्त्रास्त्र कैसर-कालीन युद्ध में काममें लाये गये। अशोक-कालमें शस्त्र रहे ही क्या होंगे—सोचना और 'रिसर्च' करना एक होगा।

मगर, गत महायुद्धमें उक्त सभी हथियार पुराने पड़ गये थे। उस युद्धमें तो सैकड़ों मील दूरसे दुश्मनकी छाती-पर आग उगलनेवाली तोपें थीं। मीलों दूरसे विपक्षीका कलेजा तोड़ देनेवाली बन्दूकें थीं। बेल या अमरूद बराबर बमगोले थे, एक-एक ऐसे, जो सौ-सौ सिपाहियोंको भुर-कुस कर देनेके लिये काफी थे। उस युद्धमें भला हाथियोंको कौन पूछता! उसमें तो बड़े-बड़े 'टैंक' किलों और पहाड़ोंमें बिल बनाते थे। बड़ी-बड़ी लारियाँ, गम्भीर गनोंसे जंगलोंको जलाकर क्षणभरमें भस्म कर देती थीं। उस युद्धमें लोगोंपर विषाक्त गैसें आजमायी गयीं। तरल-अग्नि-

की वृष्टिसे दुनियाके हरे-भरे जवान नहलाए जलाए गए।

अशोक-कालीन-युद्ध महज पृथ्वीपर हुआ था। मगर, कैसर-कालीन-युद्ध जल, थल और आकाश तीनोंमें व्याप्त रहा। ऊपर हवाई जहाज लड़े—नीचेवालोंपर आग और लोहा बरसाते हुए। नीचे भूमि और समुद्रकी छातीपर बड़े-बड़े, जाति-जातिके, वीर लड़े—एक दूसरेपर आग और लोहा बरसाते हुए! और समुद्रके भीतर भी आदमी आदमीसे लड़ा—आग और लोहे से!!

कलिङ्ग-विजयमें धन-जन या सम्पत्तिका जो नाश हुआ था, उससे सौ गुना ज्यादा भयानक सर्वनाश घण्टेके कारण गत महायुद्धमें हुआ! सारे संसारमें हाहाकार मच गया!!

मन्त्र-शक्ति

जर्मनीका एक-एक भाषा-पण्डित अनेक-अनेक बार चेष्टाएँ करके हार गया; मगर, उस अद्‌भुत घण्टेके दूसरे भागकी लकीरें न पढ़ी जा सकीं !

खैर, महायुद्धके आरम्भिक दो वर्षोंमें घण्टेकी अस्पष्टताके कारण कैसरके मनमें उतनी अशान्ति न हुई; जितनी बादमें। बात यों है कि, जर्मनी—पहले दो वर्षों तक—पूर्व और पश्चिमके युद्ध-क्षेत्रोंमें ताबड़तोड़ विजय पाता रहा। इसका कारण था विपक्ष-राष्ट्रोंकी आरम्भिक असावधानी !

मगर, कैसरने सोचा कि जर्मनोंकी विजय, घण्टेके प्रभावसे हो रही है। फलतः असल युद्धपर विशेष ध्यान न देकर वह; घण्टेका लेख पढ़ने-पढ़ानेमें अपने समयका अधिकांश बर्बाद करने लगे।

इधर "मित्रों" को अपनी कमजोरियाँ समझमें आने लगीं। उन्होंने अब अधिक सावधानीसे मोर्चा लेना शुरू किया। अब मित्र लोग जीतने भी लगे। पश्चिमी युद्ध क्षेत्रके एक भागपर तो मित्रोंने ऐसा घोर घमासान किया कि, जर्मन फौजके छक्के छूट गये।

शुरूके दो-ढाई बरसोंतक बराबर जीतनेवाली जर्मन वाहिनीको अब पग-पगपर पराजित होते देख—न जानें क्यों—कैसरके मनमें आर्य अशोकके घण्टेकी सच्चाईपर सन्देह होने लगा।

"धोका तो नहीं हुआ ?" कैसर सोचने लगे,—"नालायक कीलर कोई नकली घण्टा तो नहीं उठा लाया ? मगर नहीं, वैज्ञानिकोंने मजेमें जाँच लिया है कि, घण्टा कई हजार सालका पुराना है। फिर वह अपना गुण क्यों नहीं दिखाता—? देखो जी !"

कैसरने अपने निकट खड़े हमारे पूर्व-परिचित उसी बूढ़े वैज्ञानिकको रूक्षतासे आकर्षित किया—"देखो जी ! तीन-तीन साल बीत गये; मगर, अभीतक हम आर्य अशोकके घण्टेका भेद न पा सके ! इधर युद्धोंमें हम पराजित भी बुरी तरह हो रहे हैं। जैसे भी हो, अब तो एक बार इस घण्टे का सम्पूर्ण भेद जानना ही होगा।"

"बेशक हुजूर !"

"मेरी राय है कि, पहले इसका एक टुकड़ा काटा जाये और जाँच की जाय कि यह अष्टधाती है या नहीं !'

"मगर, गरीबपरवर !" बूढ़े वैज्ञानिकने परम नम्रतासे निवेदन किया—"ऐसा करनेसे घंटा अपवित्र तो न हो जायगा ?"

"पवित्रताकी रक्षा बहुत हो चुकी ! तीन बरसोंसे मैं इष्टदेवकी तरह इस जड़की पूजा और सेवा कर रहा हूँ, मगर, अभीतक देवता प्रसन्न नहीं हुए। अब मैं देव हो या महादेव, किसीकी प्रसन्नताकी प्रतीक्षा नहीं कर सकता। मेरे ललकारनेसे मेरे वीर बच्चे, सारे संसारके विरुद्ध, आग और लोहेकी होली खेल रहे हैं। अगर मेरा प्रयोग सफल न हुआ, तो मैं अपनी जातिका घातक, देशका नाशक और कुलका कलंक माना जाऊँगा। ह-ह ! अब समय नहीं है। मैं आज ही इस जड़ घंटेको, मानसे, अपमानसे, ज्ञान अथवा विज्ञानसे चैतन्य करूँगा। चलो हे ! इसको बर्लिनकी सबसे बड़ी वैज्ञानिक-प्रयोग-शालामें ले चलो।"

और सम्राट्की इच्छा होते ही घंटा प्रयोग-शालामें

लाया गया। कैसर और बूढ़ा वैज्ञानिक भी साथ ही आये।

"पहले...!" कैसरने गरज कर कहा—"पहले इस घंटे-का एक टुकड़ा काट कर जाँच की जाय कि, यह किन धातुओंके मेलसे ढाला गया है ?"

"अभी हुजूर !" कहकर प्रयोग-शालाका कोई तगड़ा कर्मचारी एक तेज औजार और हथौड़ेसे घंटेको काटने चला। मगर, पहले ही आघातमें कर्मचारीका हाथ कुछ ऐसा अचानक या ओछा पड़ा कि, वह स्वयं मुँहके बल घंटेपर गिर पड़ा—और लो ! न जानें कैसे उसके हाथका तीक्ष्ण यन्त्र उसीके कलेजेमें घुस गया। बेचारा देखते-ही-देखते, जहाँका तहाँ, टें बोल गया !!

अपमान

उक्त घटनासे एक बार तो सारी प्रयोग-शालामें श्मशान-शान्तिका राज्य हो गया।

हरएक वैज्ञानिकके मनमें एक ही बात खटकी; हो-न-हो मन्त्र-शक्ति सच हो!

मगर, बात तो दूर, किसीके मुँहसे हवा तक बाहर न हुई। धीरेसे, पहले सबने एक दूसरेका मुँह देखा—फिर मुर्दा कर्मचारी भाईका भयानक-रूप और फिर दृढ़ कैसरकी गंभीरता!

"कुछ भी हो, हम रुकेंगे नहीं आज!" कैसरने कहा—"आज इसका भेद जानकर ही हम सन्तुष्ट होंगे। चलो! इसको बिजलीके सबसे तेज़ आरेसे काटो! काट-काट कर, इस ढोंगके टुकड़े-टुकड़े कर दो!"

तुरन्त कई हट्टे-कट्टे ऊँचे वैज्ञानिक अधिकारी आगे बढ़े—उन्होंने यन्त्रकी सहायतासे उठाकर पूर्वी ब्राह्मणोंके बनाये घंटेको पश्चिमी विज्ञानके सबसे तेज़, बिजलीके आरेके नीचे काटनेको रखा। ऐसे आरेके नीचे जिससे तोपें तक कट जायँ; वैसे ही, जैसे चाकूसे मक्खन! ऐसे भयानक प्रचण्ड शस्त्रके नीचे वह घंटा रखा गया—और आदमी नहीं बिजलीके ज़ोरसे—आरा चलने लगा। सच-झूठकी राम जानें, पर हमें ऐसी ख़बर है कि, पूरे ४४ घंटे बड़े-से-बड़े इलेक्ट्रिक-पावरसे आरा चलाया गया—वैज्ञानिक और कैसर अधीर हो उठे—और तब कहीं कुछ फल प्रकट हुआ।

हुआ क्या कि, बिजलीसे आरेके सारे दाँत झड़ गये और वह सबसे बड़ा "पावर हाउस" अन्तमें, न जाने कैसे बेकार हो गया!

"जल्दी करो, तमाशा न देखो!—दूसरी प्रयोगशालामें चलो। इस घण्टेको हम जला देंगे—नष्ट कर देंगे।"

दूसरी प्रयोग-शालाके साथ भी प्रचण्ड "पावर-हाउस" था। वहाँके प्रधान वैज्ञानिकने घण्टेको देखकर कहा—

"माफ़ करें हुज़ूर! आज ही इस ढोंगको देखनेका मौक़ा मुझे मिला है। पूर्ववालोंकी बातोंपर यक़ीन लाना...।"

"देखो !" कैसरने वैज्ञानिकको विशेष बोलने न दिया—"देखो ! पहले इसकी जाँच तो कर लो ! यह निहायत ख़तरनाक चीज़ है ।"

"निहायत ख़तरनाक; ग़रीब परवर !" कैसरके साथियोंने भी घण्टेकी महिमा स्वीकार कर ली ।

"माफ़ करें हुज़ूर !" प्रयोगशालाके अभिमानी विज्ञानीने कहा—"ख़तरेकी बातको तो मैं मज़ाक़ मानता हूँ—हाँ, आपके हुक्मसे मैं इस घण्टेको भाप बनाकर उड़ा सकता हूँ—तरल रूपमें गला सकता हूँ—जलाकर राख कर सकता हूँ !"

"जलाना नहीं, महज़ गला देनेसे भण्डाफोड़ भी हो जायगा और इसका नामोनिशान भी मिट जायगा ।"

और एक बार पुनः आर्यअशोकका घण्टा पश्चिमकी प्रधान वैज्ञानिक-शक्तिसे टकराया पुर्ज़े हिले, मेशीनें चलीं, बिजलियाँ दौड़ीं—बेचारे आधुनिक विज्ञानने अपनी एड़ीका ख़ून चोटीतक पहुँचाया—मगर गलना तो दूर, ब्राह्मणोंका घण्टा गर्मतक न किया जा सका !

अब कैसर खीझ उठे ! उन्होंने हुकमकर यह कहते हुए घण्टेपर एक गहरी लात लगायी कि—"मैं इस जड़, ढोंग और व्यर्थ घण्टेका अपमान करता हूँ—इसमें कोई शक्ति हो तो वह मुझसे बदला ले !"

लात लगते ही पहले तो घण्टा गर्म लोहे-सा लाल होकर धुआँ उगलने लगा--! और फिर, एकाएक घनघोर शोर कर, तड़पकर वह छत तोड़कर प्रयोग-शाला के बाहर उड़ गया !

उस समय रात्रिके ११-११॥ बजे थे। पश्चिमी रणक्षेत्रके अनेक नाकोंपर उस रातमें भी गोलाबारी और शोलाबारी हो रही थी। एकाएक दोनों पक्षोंके योद्धाओंने आसमानमें उड़ते हुए एक गुब्बारेको देखा, जो त्रासक रव-कारी ख़तरेके घण्टे या फायर ब्रिगेड-सा भयानक घनघना रहा था।

मित्र-पक्षवालोंने समझा—हो-न-हो, जर्मनीकी कोई नयी कला या चाल हो। जर्मनोंने सोचा--यह कौनसा अस्त्र शत्रुओंने उड़ाया है--रे दादा ! सारे योरोपने देखा मानो कोई नया दुर्ग्रह उदित हुआ है !

कोई दो घण्टेतक तमाम पश्चिमी युद्ध-क्षेत्रपर घोर-शोरसे घनघनाकर अन्तमें, वह विचित्र घण्टा ठीक उसी विज्ञान शालाके सामने गिरा, जिसमें अभीतक किंकर्त्तव्य-विमूढ़ कैसर खड़े थे।

दल-बल-सहित घण्टेके निकट जा कैसरने देखा, उसमें-से एक तरहका तेज-धुआँ निकल रहा था, जिसके असरसे

लोग बेहोश-से होने लगे। देखते-ही-देखते सदलबल कैसर द्वितीय, भारतीय घण्टेके धुएँसे बेहोश हो, कटे रूखसे गिर पड़े और स्वप्न देखने लगे विचित्र...

उन्होंने देखा, वे घण्टेके पास उत्सुक खड़े हैं, चारों ओर तगड़े जर्मन आफिसर भी हैं, और—और ये भिक्षु कहाँसे आये ?

सपनेमें कैसरने घण्टेके पास अनेक बौद्ध-भिक्षुओंको श्रद्धासे खड़े देखा। भिक्षु लोगोंने जर्मन कैसरको नमस्कार कर निवेदन किया कि—कृपया इस घण्टेको एकबार पुनः वहीं लौटा दीजिये, जहाँसे मँगाया है। बार-बार अपमानित होनेसे यह भयानक घण्टा प्रलय उपस्थित कर सकता है।

भिक्षुओंने कैसरको बतलाया कि, घण्टेके पीछे जो कुछ लिखा है उसका अर्थ है—सर्वनाश ! उसी लिखाईके कारण घण्टेसे दिग्विजयी प्रभाव दूर हो गया है और उल्टी मार मारनेकी ताकत इसमें आ गयी है।

जल्द ही अगर यह बम्बई लौटा न दिया जायगा, तो जर्मनी ही नहीं; सारे योरोपका सर्वनाश हो जायगा !

हाँ, घण्टेके पूर्व भाग में लोहेका जो "स्वस्तिक" बना हुआ है, उसको कैसर अपने पास रख सकते हैं।

"कैसे ?" सपनेमेंही चौंककर कैसरने बौद्धोंसे पूछा—"घण्टेसे तो रत्तीभर धातु भी कोई अलग नहीं कर सकता। फिर समूचा स्वस्तिक सही-सलामत कैसे बाहर निकलेगा ? और जब सर्वनाश हो जानेपर भी हमें विजय न मिली, तब कोरा स्वस्तिक लेकर क्या जर्मन-जाति फिरसे बुतपरस्ती करेगी ? छिः !!"

नफरतसे जो हिले, तो कैसरकी नींद टूट गयी। लज्जित हो उन्होंने मन-ही-मन महान् घण्टेकी महिमाको नमस्कार किया। और लो ! उन्हें सपनेका ध्यान आया। वह स्वस्तिकको देखनेके लिये आतुर होकर घण्टेपर झपटे—मगर, वह तो, क्या जाने कैसे बड़ी सफाईसे घण्टेसे छूटकर बाहर पृथ्वीपर पड़ा था।

कैसरने सादर उठाकर उसको अपने हृदयके पास ओवरकोटके नीचे छिपा लिया !

धीरे-धीरे सभी बहोश होशमें आये और कैसरने आज्ञा दी कि—"जैसे भी हो वैसे, एमडेन नामक विचित्र युद्ध-जहाजपर यह घंटा, तुरन्त, बम्बई भेज दिया जाय। अब इसका एक क्षण भी इस देशमें रहना खतरे या सर्व-नाशसे खाली नहीं।"

एमडेनके कप्तानको कैसरने स्वयं अच्छी तरह समझा

दिया कि, बम्बईके आस-पास या भारतीय समुद्रके किसी द्वीपमें यदि कोई या कुछ बौद्ध नजर आवें, तो यह विचित्र घंटा भरसक भिक्षुओंकोही सौंप दिया जाय।

एमडेन

एमडेन जर्मनीका वह युद्ध-पोत है, जिसे हिन्दुस्तान मजेमें जानता है। एमडेनको लेकर भी इतिहाससे हमारा घोर मतभेद है।

इतिहासका खयाल है कि एमडेन जर्मनीके उस जहाजी बेड़ेका एक भगोड़ा क्रूजर है जिसे ब्रिटिश जहाजोंने एक बार भूमध्य-सागरमें घेर लिया था और जिस बेड़ेके कोई आधे दर्जन युद्ध-पोत डुबा दिये गये थे।

किसी तरह 'एमडेन' शत्रुओंकी आँखोंमें धूल डालकर भाग खड़ा हुआ और फिर तो उसने एकाधिक उत्पात किये। भारतवर्षके आस-पासके समुद्रतटोंपर उसने तूफान-सा उठा दिया। कई ब्रिटिश बन्दरगाहोंपर गोले भी बरसाये। कितने छोटे-मोटे जहाज उसने धोकेसे टारपीडो मार कर डुबो दिये!

और, बार बार हजार चेष्टाएँ करनेपर भी अंग्रेज लोग एमडेनको न तो गिरफ्तार कर सके और न नष्ट ही ! अकेले उस क्रूजरने अखिल-भारतमें त्रास उत्पन्न कर दिया। अनेक बार वह अंग्रेजोंकी नाकके नीचेसे, वेश बदलकर निकल गया और ये उसे न पकड़ सके।

वही एमडेन, उसी रण-यात्रामें, एक दिन बम्बईके पास किसी ब्रिटिश गश्ती जहाज द्वारा पहचाना गया। उसने खतरेकी सूचना दी। कई ब्रिटिश जहाज एमडेनके पीछे पड़ गये। पर वह शैतान देखते-ही-देखते न जानें किधर गायब हो गया !

मगर, असिलमें वह कहीं गायब नहीं हुआ था। पीछा होते देख, तुरन्तही, उसने अपना रंग बदल लिया और आनन-फाननमें सारा जहाज लहरोंके रंगमें रँग दिया गया था।

यद्यपि अंग्रेजी जहाज एमडेनको न पकड़ सके, फिर भी वह किसी एकान्तस्थलकी तलाशमें बे-तहाशा भागा चला जा रहा था। उसी वक्त उसके कप्तान की नजर एक छोटेसे द्वीपपर गयी, जिधर कोई पीली पताका लहरा रही थी।

कैप्टेनने दूरबीन लगाकर जाँच की, तो, दिखाई पड़े

एक छोटे द्वीपके किनारे खड़े कई भिक्षु—जो अपने वस्त्रोंको हिला-हिलाकर एमडेन जहाजका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे।

बौद्ध भिक्षुओंको देखते ही कप्तानको कैसरकी बात याद आ गयी—कि, "भरसक घण्टा भिक्षुओंको ही दिया जाय।" हिम्मत कर कप्तानने एमडेनको उस द्वीपके किनारे लगाया और एक छोटी नाव पर कई आदमी उन भिक्षुओंके पास पहुँचे। इन्हें देखते ही विशुद्ध जर्मन-भाषामें भिक्षुओंने पूछा—

"घण्टा कहाँ है ?"

"जहाजपर" आश्चर्यसे कप्तानने जवाब दिया—"मगर, तुम्हें कैसे मालूम कि वह हमारे ही पास है ?"

"जिस घण्टेमें आश्चर्य ही आश्चर्यकी बातें हों, उसके बारेमें विशेष पूछ-जाँचकी जरूरत नहीं। उसे फौरन किनारे लाकर हमें सौंप दो !"

कप्तानने देखा, बात कहनेवाले भिक्षुके सारे अङ्ग ऐसे फूले थे, मानों उसे किसीने बुरी तरह मारा हो...

"क्यों ?" पूछा चकित कप्तानने—"तुम्हारी देहपर आघातके चिह्न कैसे हैं ?"

"ये चिह्न पश्चात्तापके हैं" भिक्षुने उत्तर दिया—"मेरा नाम सुअङ्गसांग है। बम्बईके बोरीवली कस्बेके पास, जहाँसे घण्टा अपवित्र होकर चोरी गया था—मैं ही उसका रख-वाला था। मेरी ही असावधानीसे वह गायब हुआ। उसी पापका प्रायश्चित्त मैं, अपने तनको पीट-पीटकर दण्ड दे-देकर, कर रहा हूँ। तुम लोगोंके, घण्टेके साथ, आ जानेसे आजसे मेरी यातना समाप्त होगी। आज मैं पहले उस घण्टे को सदाके लिये नष्ट कर दूँगा।" और फिर स्वयं निर्वाण प्राप्त करूँगा।"

"क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने समझा नहीं।" एमडेन-के कप्तानने भिक्षु सुअङ्गसांगसे पूछा।

"पहले घण्टेको किनारे लाओ! फिर मतलब पूछना।"

तुरन्त, सावधानीसे, घंटा भिक्षुओंके पास लाया गया। उसको देखते ही भिक्षु-सुअंगसांग एक बार तो उससे चिपक गया। रोने लगा। मानो युगों बाद अपने प्रियतमको पा गया हो!

इसके बाद भिक्षुओंने कप्तान और दूसरे जर्मनोंको दूर खड़े होकर तमाशा देखनेको कहा और वे घण्टेको जलानेकी तैयारी करने लगे।

जिस घण्टेको बर्लिनकी बड़ी-से-बड़ी वैज्ञानिक मेशीनें नष्ट न कर सकीं, उसको वे भिक्षु तिनकोंसे जलाने-

की तैयारी करने लगे ! यह देखकर जर्मन कप्तान बिना बोले न रह सका—

"अरे फ़कीरो !" उसने कहा—"यह घंटा तुमसे और तुम्हारे तिनकोंसे नहीं जलेगा।"

"चुप रहो !" संकेतसे सुअंगसांगने कहा। कुल भिक्षु सात थे। सातोंने न जाने क्या कुछ मन्त्र बुद-बुदाकर तिनकोंके इक्कीस पूले घंटेके चारों ओर जमा कर दिये।

"आग लगानेके लिये 'माचिस' है तुम्हारे पास ?" कप्तानने अपनी डिब्बी दिखाते हुए सहायता देनी चाही।

"चुप रहो !" सुअंगसांगने पुनः रोका जर्मनको और मन्त्र पढ़ता हुआ वह, घंटेकी तरफ बढ़ा। रह-रहकर भिक्षु जब अपनी हथेली रगड़कर मन्त्रके साथ घण्टेपर फूँक मारता, तब उसके हाथ या मुँहसे आगकी लपट निकलती नजर आती, जिसे देखकर सारे जर्मन नाविक दंग और हैरान रह गये !

आखिर घण्टेके आसपासके तिनके सुलगने—जलने लगे और एमडेनके कप्तानके देखते-ही-देखते आर्य-अशोकका वह मन्त्र-पूत घंटा जलकर खाक हो गया या उड़कर भाप—कोई कुछ समझ ही न सका ! !

अब तो कप्तानके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। जिस

घंटेसे बड़े-बड़े 'पावर हाउस' भी हार गये, उसीको पूर्वके भिखारियोंने घास और मन्त्रसे जलाकर नष्ट कर दिया—! धन्य !! धन्य !!!

सुअंगसांगकी तरफ बढ़ते हुए कप्तानने पूछा—"साधु, किस युक्तिसे तुमने इस भयानक घंटेको नष्ट कर दिया ? जरा मैं भी सुनूँ" !

मगर, पास पहुँचकर उसने सुअंगसांगको मरा हुआ पाया। महान आश्चर्यसे विमूढ़ होकर कारण जाननेके लिये, एमडेनका कप्तान ज्योंही दूरसे भिक्षुओंकी ओर मुड़ा त्योंही, वह मैदान साफ नजर आया !

घंटेकी राख और सुअंगसांगके शवके सिवा, वहाँ अगर और जीव थे, तो, वे जर्मन नाविक लोग थे। सबके सब भिक्षु, न जाने कहाँ, अन्तर्धान हो गये !

स्वस्तिक

इसके बाद महायुद्धमें क्या हुआ—उसका फल किसके लिये मीठा और किसके लिये कड़वा हुआ, यह सब छान-बीनकर लिखना हमारा काम नहीं। हमारा काम तो घंटेके साथ ही समाप्त हो जाता है।

हाँ, पाठकोंको याद दिलानेके लिये इतना लिख देना अत्यन्त आवश्यक मालूम पड़ता है कि, आर्य अशोकके उस अपवित्र घंटेके सम्पर्कमें, बीसवीं सदीमें, जो कोई भी आया वह बिना कुछ-न-कुछ दुःख भोगे न रह सका। अधिकांश लोग तो सीधे सुरपुर ही चले गये।

घंटेको नापाक करनेवाले गोयनीको जानसे हाथ धोना पड़ा और उसके भाईको भी!

भारतसे उड़ाकर जर्मनी ले जानेवाले हेर कीलरको तोपसे उड़ना पड़ा!

दिग्विजयके लोभमें जर्मन जातिका घंटेके कारण सत्यानाश हो गया !

रक्षक भिक्षु सुअंगसांगकी जान भी घंटेके ही कारण गयी !

घंटा नष्ट होनेके चन्द दिनों बाद ही 'एमडेन' शत्रुओं द्वारा घेर लिया गया। ऐसी गोला-बारी हुई उसपर, कि जहाजके धुर्रे उड़ गये। अधिकतर नाविक जानसे मारे गये और महज एक-दो साथियोंके साथ कप्तान किसी तरह जान बचाकर भाग सका !

सबपर तुर्रा यह, कि युद्धसे, जर्मन राष्ट्रका दम टूट जानेपर शत्रुके हाथमें पड़नेसे पहले कैसर द्वितीय जिस वायुयानमें हालैण्डको भागे, वह वही विमान था, जिसपर हेर कीलर उस भयानक घण्टे को कैसरके सामने लाया था !

जो हो, जर्मनी छोड़नेके पूर्व कैसर जब उस हवाई जहाजमें चढ़ने लगे, तब देखनेवालोंने उनके गलेमें फौलाद-का एक वजनी 'स्वस्तिक' रेशमकी रस्सीमें क्रासकी तरह लटकते देखा।

हम उस स्वस्तिकका सम्बन्ध नात्सियोंके प्रिय-चिह्नसे इसीलिए नहीं जोड़ेंगे कि, इतिहास हमारा खण्डन करेगा,

और कहेगा, नात्सियोंके स्वस्तिकको उसके नेता हेर हिटलरने सबसे पहले उस स्कूल या इस गिरजेके शिखरपर देखकर अपनाया, और, घंटेसे, बाल बराबर भी सम्बन्ध न रख कर मौलिक है नात्सी—स्वस्तिक !

अशोक और कैसर

इतिहासको जहाँतक पता है, जीवनके आरम्भिक कालमें सम्राट् अशोक किसी नीरो, जार या कैसरसे कम नहीं थे। कलिङ्गके सर्वनाशकी घटना तो बादमें हुई, उसके बहुत पहले, सम्राट् अशोकके अनेक कर्म ऐसे क्रूर और प्रचंड हुए, जिनके अनुमानसे भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

वह सम्राट् अशोक ही थे, जिन्होंने सुसीम नामक अपने भाईको धोका देकर स्वागतके बहाने भयानक 'परिखा' में प्रज्ज्वलित खैरको आगमें जलवा दिया था। क्यों? क्योंकि अशोकके मनमें यह भय था, कि सुसीम स्वयं राजा बनना चाहता है। अतः राज्य या धन या स्वार्थके लिये अशोकने वही किया, जो कोई भी लोभी या आततायी कर सकता है।

वह सम्राट् अशोक ही थे, जिन्होंने एक बार अपने अमात्योंसे चिढ़कर, खुद अपने हाथसे, पाँच सौ सरदारों के सर—गाजर-मूलीकी तरह—काट दिये थे।

वह सम्राट् अशोक ही थे, जिन्होंने अपने को कुरूप समझकर, हँसनेवाली पाँच सौ स्त्रियोंको अशोक वृक्षका पत्ता तोड़नेके अपराधमें, अपमानसे चिढ़कर या द्वेषसे सुलग-कर आगमें जलवा दिया था।

और, वह भी सम्राट् अशोक ही थे, जिनके बारेमें इतिहास कहता है कि आरम्भिक कालमें उन्हें हत्यासे प्रेम-सा था। कुरूप अशोकका हृदय भी वैसा ही विकट था, जैसा उनका मुँह। अपनी राजधानीमें उन्होंने एक साक्षात् नरक बनवा रखा था और नरकके अधिकारीको आज्ञा थी, कि उधरसे जो कोई भी गुजरे उसको बिना विवेक या विचारके तरह-तरहकी साँसतोंसे सता कर मार डाला जाय!

उसी नरकके बारेमें इतिहास कहता है कि एक बार उधरसे एक श्रमण या बौद्ध तपस्वी निकला। बेचारा भिक्षाटन करते-करते अचानक जो नरक दरवाजेपर आ गया; तो उसको लेनेके देने पड़ गये। नरकके अधि-कारीने उस श्रमणको तुरन्त गिरफ्तार कर लिया और

मरनेवाले अभागोंकी पंक्तिमें वह भी बैठा दिया गया। मरनेके पूर्व, पूजा तथा प्रार्थनाकी फुर्सत माँगकर, श्रमण बलिदानके लिये बल संचय करने लगा। इसी बीचमें एक आदमी बाँधकर नरकमें लाया गया और श्रमणकी आँखोंके सामने ही उसके हाँथ-पाँव निर्दयतासे काट डाले गये!

उक्त दृश्यको देखते ही श्रमणको ज्ञान हो गया। समस्त सांसारिक सुविधाओंकी अनित्यता उसकी समझमें आ गयी। वह कुछ ऐसा तन्मय हो गया अपने तत्व-ज्ञान से, कि उसे उसी वक्त जीवन-मुक्ति प्राप्त हो गयी! उसने 'अर्हत पद' पा लिया!!

नरकके अधिकारीने आकर श्रमणको मरनेके लिये तैयार होनेकी सूचना दी। वह तेलसे खौलते हुए कड़ाहेमें डाल दिया गया; लेकिन आश्चर्य! अब उस जीवन-मुक्तका एक बाल भी बाँका न हो सका। खौलता हुआ तेल पहाड़ी सोतेके जलकी तरह ठंडा हो गया और वह तपस्वी उसपर वैसे ही तैरने लगा, जैसे पानीपर मक्खन!

इस घटनाका प्रभाव सम्राट् अशोकपर ऐसा पड़ा, जिसने उनके क्रूर हृदयको शान्त करनेमें बड़ी सहायता दी। वह नरक उसी दिनसे बन्द कर दिया गया।

उपर्युक्त घटनाको इतिहाससे उठाकर यहाँ रखनेका कारण केवल यह दिखलाना है कि, एक वक्त ऐसा भी था, जब देवप्रिय सम्राट् अशोक क्रूरता या कठोरतामें किसी भी कैसरसे कम नहीं थे। मगर, ज्ञान होते ही उन्होंने अपने अज्ञानको पहचाना। पहचानते ही मिथ्या-पथको छोड़, सत्पथका अनुसरण करना उन्होंने आरम्भ कर दिया।

इस बातको सुनकर भला कौन विश्वास करेगा कि उक्त क्रूर-कर्म-कर्त्ता वही सम्राट् अशोक थे, जिन्होंने अपनी राजधानीमें विख्यात बौद्ध-आचार्य और स्थविर उपगुप्तके स्वागतके लिये हाथी छोड़कर पैदल यात्राकी थी। कई पग पैदल चलकर स्वयं सहारा देकर सम्राट्ने साधु उपगुप्तको तावसे नीचे उतारा था; और इसके बाद उनके चरणों पर वैसे ही गिर पड़े थे, जैसे बनवासी रामके चरणोंपर भरत! उसी सम्राट् अशोकने हाथ जोड़कर साधुसे कहा—"महान् पर्वतों सहित समुद्रावेष्ठित पृथ्वीपर प्रचंड शत्रुओंको परास्त कर अपना साम्राज्य फैलाकर भी जो सुख मुझे आजतक नहीं प्राप्त हुआ था, वही स्वर्गीय सुख, हे महान् त्यागी आचार्य! आपके चरणोंके दर्शनसे आज मुझे मिला है।"

इसका रहस्य क्या है? अशोक जैसा सम्राट् अधिकारसे जो सुख न पा सका, शासन, सेना और साम्राज्यसे जो सुख न पा सका, वही सुख उसको एक भिक्षुके दर्शनोंसे कैसे मिल गया! इसका उत्तर सुखके ठीक पतेमें है। आर्योंने एकाधिक बार भिन्न-भिन्न मार्गोंसे शान्ति और सुखकी खोजकी। तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र, विजय और पराजय, देश और विदेश—कोने-कोनेमें उन्होंने सुख और शान्तिको ढूँढ़ा और तब उन्हें सत्यके दर्शन मिले।

जाना उन्होंने, कठोर साधनोंके बाद, कि शान्ति या सुख कोई ऐसी चीज नहीं जो बाहरी बाजारोंमें बिकती-मिलती हो। वह तो, मृगकी कस्तूरीकी तरह अपने 'आपे' के अन्दर ही होती है और सन्तोष, दया तथा त्यागसे उसके दर्शन सौभाग्यशालियोंको मिलते हैं।

इस सत्यका ज्ञान होते ही सम्राट् अशोकने बाहरकी विजयोंको व्यर्थ समझ कर अन्तस्तलके वासना-देशोंपर विजय प्राप्त करनेकी चेष्टा आरम्भ की—और यह समझकर कि, वाह्य विजयके साधन अन्तः विजयके लिये सर्वथा व्यर्थ एवं अनुपयुक्त हैं।

इसीलिये तो—ज्ञान होते ही—सम्राट् अशोकने साम्राज्यकी सारी सशस्त्र सेनाओंको भंग कर दिया।

राजनीतिमें दुष्टताकी जगह दया चमकने लगी। जिन संसारी विभूतियोंके नामपर राज-लोलुप नरेश अपने माता-पिता, भाई और पुत्रकी हत्याएँ तक करते, उनका सर्वथा त्याग कर दिया। भोग, आनन्द और विलासमें सुख ढूँढना बन्द कर, त्याग और तपस्या और सेवामें दुख-मय सुखकी खोज करने लगे। शस्त्रसे जीते जानेवाले जीव, प्रेमसे विजित किये जाने लगे। अपकारीको दंड न देकर क्षमादान मिलने लगा। शिकारोंका मारना बन्द किया गया। पशुओंके दागनेपर भी शासनकी अँगुली उठी। एक जमानेके नरकाधिकारी सम्राट् अशोकने तेलचट्टे और चमगीदड़ोंकी भी हत्या बन्द करा दी! सम्राट्की आज्ञासे अब कोई हरे रूखको भी नहीं काट सकता था!

फलतः क्रूरकर्मा अशोकसे दयालु अशोक इतने अधिक महान् हुए जैसे तिलसे ताड़ या राईसे पहाड़! आज सारे संसारके काले इतिहासमें चिराग लेकर ढूँढ़नेपर भी अशोककी तरह प्रकाश-पूर्ण मनस्वी, तपस्वी और यशस्वी सम्राट् कोई नजर ही नहीं आता।

मगर, दुःखकी बात है कि संस्कृत ग्रन्थों और आर्य सिद्धान्तोंका भरपूर अध्ययन और अभ्यास करके भी जर्मन जातिके जिज्ञासु आर्यत्वका 'गुर' न पा सके। कैसरने

अशोकके घंटेकी दिग्विजयकी कहानी तो पढ़ी; मगर, स्वयं देवप्रिय सम्राट् अशोकके प्रेम-रहस्यको वह न समझ सके।

वह न समझ सके कि युद्धसे शान्ति वैसे ही असम्भव है, जैसे पानी मथनेसे नवनीत या जैसे सूर्यका चित्र दिखलानेसे अन्धकारका दूर होना। वह न समझ सके इस बातको कि, वासनाका घी डालनेसे विषयकी आग शान्त नहीं होती।

फलतः ज्ञान हो जानेके कारण, सेना और शस्त्र त्याग देनेपर भी, प्रेम और दयाके दिव्यास्त्रोंसे सम्राट अशोक केवल जनप्रिय ही नहीं, वरन् देवप्रियतक हो गये।

और अज्ञानसे आन, बान, शान, और शस्त्र और सेनासे जर्मनीके लाल-आर्यों और कैसरने गत महायुद्धमें पराजयका ऐसा कड़वा रस चखा, कि आजतक सारी जर्मन जातिका मुख कड़वा और कलङ्कित है और अबतक, युद्ध-कोलाहलसे अशान्त-मस्तिष्क जर्मनीसे व्यग्र संसार कह रहा है—

"शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!"
